829. प्रश्न—बेईमान आदमी सुखी है, सच्चा दुखी, ऐसा क्यों?

उत्तर—बेईमान आदमी बाहर से सुखी दिख सकता है, परन्तु वह सुखी होता नहीं। ईमानदार हृदय से सुखी होता है।

830. प्रश्न—क्या धर्म साहेब कबीरदेव के प्रमुख शिष्य थे? क्या उन्हीं को पूरे पंथ का राज्य दिया गया? क्या वंशगुरुओं के हाथों से पान-परवाना पाये बिना जीव मुक्त नहीं होता?

उत्तर—श्री श्रुतिगोपाल साहेब, श्री भगवान साहेब, श्री जागू साहेब जैसे कबीरदेव के प्रमुख शिष्य थे, पीछे से वैसे श्री धर्म साहेब पंथ के एक महान पुरुष हुए। पंथ का राज्य एक को नहीं, सभी को प्राप्त है। जो संत अपना तथा दूसरे का जितना कल्याण करेगा, वह उतना ही सबके दिल का सम्राट हो जायेगा। 'पान-परवाना से मोक्ष' की बात करना तो बच्चों का भोलापन है।

831. प्रश्न—मूर्ख से पाला पड़ने पर क्या करें?

उत्तर—मौन। कबीरदेव ने कहा है—'मूरख सो रहिये झख मारी' तथा 'मूरख सो क्या बोलिये!'

832. प्रश्न—मनुष्य सबके बीच रहकर भी अपने आप को अकेला कब अनुभव करता है?

उत्तर—निराशा में या ज्ञान में। निराशा में वह हार जाता है और ज्ञान में अपने असंगत्व (अकेलापन) का बोध करके तृप्त एवं शांत हो जाता है।

833. प्रश्न—क्या महात्मा बुद्ध मांस खाते थे?

उत्तर—वे हिंसा पर तो रोक लगाते थे, परन्तु भिक्षा में जो मिल जाये, उसे खा लेने को कहते थे चाहे मांस भी हो। हां, तुम्हारे लिए मारकर न लाया गया हो। कुछ लोग कहते हैं, वे मांस नहीं खाते थे। महात्मा बुद्ध की बहुत-सी अच्छाइयां हैं, उन्हें लो। मांसाहार से क्या मतलब!

834. प्रश्न—अंजान में गलती हो गयी तो सुधार कैसे हो?

उत्तर—उस गलती को न दोहराने से।

835. प्रश्न—आज इंसानियत खत्म होती क्यों जा रही है?

उत्तर—ऐसी बात नहीं है। सब तरह के आदमी सब समय प्राय: रहते हैं।

836. प्रश्न—क्या ऐसे सिद्ध होते हैं जिनके छू लेने से कोढ़ी तुरन्त अच्छे हो जायें और अंधे को आंखें मिल जायें आदि?

उत्तर—ऐसे होते तो नहीं हैं न हो सकते हैं, परन्तु धूर्त या मूर्ख लोग ऐसा प्रचार करते हैं।

837. प्रश्न—मनुष्य का भयंकर शत्रु कौन है जिसे उसे जीतना चाहिए?

उत्तर—उसके अपने दुर्गुण।

838. प्रश्न—कई काम करते समय जीव मरते हैं, जैसे दीवार पर प्लास्टर करते समय, लकड़ी छीलते समय, खेत जोतते समय आदि। क्या करें?

उत्तर—काम करना समाज की पवित्र सेवा है, अत: करो। जितना सम्भव हो जीव हिंसा बचाओ।

839. प्रश्न—भविष्य के लिए प्रबन्ध करें कि वर्तमान में सन्तुष्ट रहें?

उत्तर—भविष्य का कुछ प्रबन्ध करते हुए भी वर्तमान में सन्तुष्ट रहें।

840. प्रश्न—हम पति-पत्नी भिन्न स्थानों से दीक्षित हैं, अत: आपस में विरोध रहता है। क्या करें?

उत्तर—दोनों के मत भिन्न भले रहें, किन्तु परस्पर में प्रेम होना चाहिए और दोनों के गुरुओं को दोनों आदर दें।

841. प्रश्न—क्या गृहस्थ के लिए विवाह अनिवार्य है? इस पर धर्म, जाति, सम्प्रदाय का प्रतिबन्ध क्यों? क्या प्रचलित आडंबरपूर्ण विवाह-प्रणाली से आदर्श-विवाह, कोर्ट-मैरिज ठीक नहीं है?

उत्तर—लड़की-लड़का पूर्ण युवती तथा युवक हो जायें और एक दूसरे को पसन्द कर लें। उसके साथ-साथ माता-पितादि स्वजन भी उन्हें पसन्द कर लें। फिर देश, काल के अनुसार जिस विधि से हो विवाह की रस्म कर लेना चाहिए। इससे मन में एक-दूसरे के प्रति बन्धन हो जाता है। विवाह की रस्म आडम्बर-रहित तथा न्यून खर्च वाला होना चाहिए। कोर्ट-मैरिज तथा आदर्श-विवाह भी ठीक है, परन्तु दोनों तरफ की पूर्ण स्वीकृति होनी चाहिए। जवानी भावुकतापूर्ण होती है। वृद्धों की राय अच्छी होती है।

842. प्रश्न—नशीली चीज लेने से कुछ समय के लिए मानसिक परेशानी दूर हो जाती है, अत: यह बुरा क्यों है?

उत्तर—नशीली वस्तुएं मनुष्य के मन और शरीर के स्वास्थ्य को धीरे-धीरे निगल जाती हैं। इनसे हजार कोस दूर रहो।

843. प्रश्न—क्या अगस्त्य समुद्र पी गये थे?

उत्तर—उन्होंने समुद्र से पार जाकर आर्यत्व का प्रचार किया था, इसलिए आलंकारिक भाषा में कहा गया कि वे समुद्र पी गये थे।

844. प्रश्न—चिंता दूर करने की क्या दवा है?

उत्तर—विवेकज्ञान। यहां सब कुछ नश्वर है, किसकी चिंता करें!

845. प्रश्न—जड़तत्त्व में स्वयं गुण है, तो गुण तो द्रव्य में रहता है। क्या जड़ तत्त्व द्रव्य है?

उत्तर— बिलकुल द्रव्य है।

846. प्रश्न—ध्यान करने के पहले क्या-क्या तैयारी करूं?

उत्तर—हलका और सात्विक आहार, मन की सरलता, उलझनों का त्याग, राग-द्वेष-विहीनता आदि का आचरण।

847. प्रश्न—बच्चों के क्या कर्तव्य हैं?

उत्तर—सदाचार, अनुशासन और स्वच्छता से रहकर विद्याध्ययन करना।

848. प्रश्न—'साधु न चले जमात' का अर्थ क्या है? क्योंकि संत समाज की वंदना की गयी है।

उत्तर—यहां साधु का अर्थ जीवन्मुक्त है। जीवन्मुक्त विरला होता है।

849. प्रश्न—महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भागवत का रचयिता वोपदेव को माना है, व्यास को नहीं। आपका क्या विचार है?

उत्तर—भागवत व्यासकाल के बहुत पीछे की रचना है। श्रीकृष्ण महाभारत में वीर तथा ज्ञानी के रूप में हैं, परन्तु भागवत ने उनको कई जगह घोर रसिक तथा परांगनारत बनाकर उनकी छवि घोर मलिन कर दी है। फिर पीछे सफेदी पोती गयी है। इन सबसे व्यास को जोड़ना अनर्थ है।

850. प्रश्न—कृपया लहरतारा कबीर-स्मारक पर प्रकाश डालें?

उत्तर—काशी का लहरतारा सद्गुरु कबीर के प्राकट्य से जुड़ा है। काशी कबीरचौरा से सम्बन्धित स्मारक पहले से है। अब बहुत वर्षों से खरसिया के हुजूर श्री उदित नाम साहेब लहरतालाब में एक विराट कबीर-स्मारक बनवा रहे हैं जो अत्यन्त प्रशंसनीय है। उनके सहयोगी धर्माधिकारी श्री मनोहर साहेब तथा उनका विशाल साधु समाज उस सेवा में रत हैं। इसके लिए उन्हें कोटिश: बधाई है। भक्त तथा मठाधीशजन उन्हें अधिक-से-अधिक आर्थिक सहयोग करें, यह शुभकामना है।

बस्ती जिला का मगहर सद्गुरु कबीर की समाधि स्मृति से जुड़ा है। समाधिस्थल को पर्यटकों के लिए दर्शनीय बनाने हेतु सुना गया है सरकार ने पैंतालिस (45) लाख रुपये की सहायता करने का वचन दिया है। एकता,

मानवता तथा सच्चे आत्मज्ञान के पुरोधा संत कबीर की याद के लिए सरकार तथा जनता जितना साधन जुटाये, प्रशंसनीय है।

851. प्रश्न—क्या रावण के दस शीश तथा बीस भुजाएं थीं?

उत्तर—यह आलंकारिक कथन है। रावण के एक शीश और दो ही भुजाएं थीं।

852. प्रश्न—क्या वाल्मीकि पहले डाकू थे? फिर वे इतने उच्च कवि तथा ऋषि कैसे हो गये?

उत्तर—मनुष्य में महान बल है। वह अपने को पूर्ण बदल सकता है।

853. प्रश्न—विज्ञान विनाश की ओर है या विकास की ओर?

उत्तर—दोनों ओर।

854. प्रश्न—यदि सिंह को हिंसा का पाप नहीं लगता, तो मनुष्य को क्यों लगना चाहिए?

उत्तर—क्योंकि मनुष्य ज्यादा समझदार है।

855. प्रश्न—क्या साधक-साधिकाओं को सिनेमा, रामलीला तथा रास-लीला आदि देखना चाहिए?

उत्तर—नहीं। ये सब रजोगुण उत्पन्न करने वाले हैं। यह सब गृहस्थों की चीजें हैं। रासलीला आदि तो श्रीकृष्ण जी के विषय में गलत दृष्टि से प्रचार करने वाले होने से सबके लिए त्याज्य होने चाहिए।

* * *

856. प्रश्न—शब्दब्रह्म, अनाहतनाद, नूर, परम प्रकाश क्या है?

उत्तर—शब्द तथा नाद वायु है, प्रकाश अग्नितत्त्व है। इन सबका द्रष्टा एवं साक्षी चेतन है, जो तुम हो। तुम किसी शब्द एवं प्रकाश में न अटककर अपने चेतन स्वरूप को समझो और उसमें स्थित होओ।

857. प्रश्न—खेचरी मुद्रा क्या है और अमृतपान क्या है?

उत्तर—जिह्वा को उलटकर कपालकुहर से टपकते हुए द्रव को पीना खेचरी मुद्रा एवं अमृतरस पान कहते हैं, यह हठयोग की प्रक्रिया है। वस्तुत: अपना अविनाशी चेतन स्वरूप ही अमृत है और अपने आप में शांत होना ही असली अमृतपान है।

858. प्रश्न—अनाम क्या है जिसके द्वारा आत्मशांति होती है?

उत्तर—सबका नामकरण करने वाला यह चेतन तत्त्व ही अनाम है। यह जब अपने आप शांत हो जाता है तभी शांति है।

859. प्रश्न—बीजक में है ''टोपी पहिरे माला पहिरे छाप तिलक अनुमाना।'' क्या इसमें वेष का खण्डन नहीं हो गया?

उत्तर—कबीर साहेब इसकी अगली पंक्ति में कहते हैं ''साखी शब्दै गावत भूले, आतम खबरि न जाना।'' जिसने अपनी आत्मा को नहीं पहचाना उसके वेष का कोई खास मूल्य नहीं। इसका अर्थ वेष का खण्डन नहीं है, किन्तु आत्मज्ञान, स्वरूपज्ञान पर जोर देना है।

860. प्रश्न—साधु को स्वपाकी होना चाहिए कि अन्य का बनाया भी खाना चाहिए। इससे मोक्ष में क्या अन्तर पड़ता है?

उत्तर—मोक्ष स्वरूपज्ञान एवं विषय-वासना के त्याग से सम्भव है। स्वपाकी, परपाकी की बात आचारगत है। जो स्वपाकी रहना चाहता है, उसे हम विघ्न क्यों करें?

861. प्रश्न—मैंने पांच रुपये दान किये। दान पाने वाले ने उसकी शराब पी ली, तो मुझे क्या फल मिलेगा?

उत्तर—पात्र समझकर दान करो। यदि तुम ठीक समझकर दान किये, तो तुम्हारे लिए फल ठीक है। दान का दुरुपयोग करने वाला दोषी है।

862. प्रश्न—एक विद्वान कहता है कि कुसंग काजल की कोठरी के समान दाग लगा ही देगा और दूसरा विद्वान कहता है कि कुसंग मनुष्य का कुछ नहीं बिगाड़ सकता है, जैसे चन्दन के पेड़ में सर्प के लिपटे होने पर भी चन्दन में विष नहीं व्यापता। क्या मानें?

उत्तर—कुसंग में पड़कर अच्छे-से-अच्छे लोगों का पतन हो जाता है। हां, विवेकवान को जब कभी बलात कुसंग मिल जाता है, तब वे अपने आप को बड़ी सावधानी से उससे उसी प्रकार बचा लेते हैं जैसे चन्दन अपने आप को सर्प के विष से बचा लेता है, और जितना सम्भव होता है वे शीघ्र कुसंग का त्याग कर देते हैं। वैसे कुसंग से दूर रहने ही में कल्याण है।

863. प्रश्न—जीव के शरीरांत में वासना क्यों नहीं मरती?

उत्तर—क्योंकि जीवन में उसको मारा नहीं गया है।

864. प्रश्न—द्रष्टा-अभ्यास-काल में बहुत-से संकल्प उठने लगते हैं। वे कैसे शांत होंगे?

उत्तर—मन में जितना अधिक वैराग्य बढ़ेगा तथा नित्य अभ्यास होता रहेगा उतना शीघ्र मन संकल्परहित होकर शांत हो जायेगा। बिना घबराये नित्य साधना करो।

865. प्रश्न—पारख सिद्धान्त के संत श्वेत वस्त्र धारण करते हैं। क्या इसे गृहस्थ, शिक्षक, कर्मचारी, चपरासी—सब धारण कर सकते हैं?

उत्तर—साधु वेष गृहस्थ न धारण करे। वह धोती-कुरता, पैण्ट-शर्ट सफेद धारण कर सकता है। धारण करता ही है।

866. प्रश्न—शादी के लिए लड़की या लड़के भक्त नहीं मिलते, क्या करें?

उत्तर—सदाचारी का चुनाव करो पीछे वे भक्त बन सकते हैं।

867. प्रश्न—पारख सिद्धान्तानुसार कुछ करना ही बन्धन है; फिर संध्यापाठ आदि करना भी बन्धन क्यों नहीं?

उत्तर—यदि तुम कुछ नहीं करते हो तो संध्यापाठ आदि भी मत करो और यदि कुछ करते हो तो संध्यापाठ आदि साधना के काम क्यों न करो। शुद्ध पुरुषार्थ से ही अशुद्ध वासनाएं कटती हैं और जीवनपर्यन्त शुद्ध पुरुषार्थ की आवश्यकता है।

868. प्रश्न—रोग तथा दरिद्रता से पीड़ित परिवार में रहने वाले व्यक्ति का कर्तव्य स्वरूपस्थिति करना है कि परिवार की सेवा?

उत्तर—दोनों।

869. प्रश्न—किसी से मतभेद होने के बावजूद भी मतैक्य हो सकता है?

उत्तर—दोनों की समझ एक हो जाने पर मतैक्य हो सकता है। वैसे मत भिन्न रहने पर भी परस्पर प्रेम का व्यवहार रखना कर्तव्य है।

870. प्रश्न—सम्प्रदायवाद बढ़ता ही जा रहा है, क्या निदान?

उत्तर—विविध सम्प्रदाय सदैव रहे हैं तथा रहेंगे। सम्प्रदाय चाहे जितने रहें, सबकी आवश्यकता एक है—शांति की प्राप्ति। अत: सभी सम्प्रदायों को चाहिए कि वे एक दूसरे को समझें तथा सबकी सच्चाइयों को आदर दें।

871. प्रश्न—कुंडलिनी की क्या विशेषता है?

उत्तर—यह हठयोग का साधन है। इसके चक्कर में मत पड़ो। सदाचार और सुन्दर विचारों द्वारा मन की पवित्रता साधो।

872. प्रश्न—मानस का यह वचन कहां तक ठीक है—''मानस पुण्य होय नहि पापा''।

उत्तर—यदि मन के पाप नहीं लगते, तो मन को शुद्ध करने की कोई आवश्यकता ही नहीं होती। मन ही तो सारे कर्मों का मूल है। अत: मन के भी पाप लगते हैं, इसीलिए उसे सदैव शुद्ध रखना कर्तव्य है।

873. प्रश्न—दुख का स्वरूप क्या है, उसका कारण क्या है तथा उसका निवारण कैसे हो?

उत्तर—परतन्त्रता दुख का स्वरूप है। अज्ञान उसका कारण है और ज्ञान से उसका निवारण होता है। परतन्त्रता है मन की गुलामी।

874. प्रश्न—मन में अनेक गलत विचार आते हैं। उनसे बचने का उपाय क्या है?

उत्तर—दृढ़ संकल्प करो कि हम गलत विचार मन में नहीं लायेंगे। इसके साथ सद्ग्रंथों का स्वाध्याय तथा सत्संग का भी आधार रखो। नित्य प्रात: जगने पर पांच मिनट तक प्रतिज्ञा करो कि आज पूरा दिन मैं शुद्ध मन से रहूंगा और सोने के पहले पांच मिनट तक विचार करो कि मैंने आज कब-कब गलत विचारों को मन में स्थान दिया है। ग्लानि करो और पुन: केवल पवित्र विचार लाने की प्रतिज्ञा करो। यह साधना नित्य जगने के बाद तथा सोने के पूर्व करो।

875. प्रश्न—आप मार्क्स एवं लेनिन को किस रूप में मानते हैं—सन्त या मानव?

उत्तर—सन्त की परिभाषा दूसरी है। मैं मार्क्स और लेनिन को राजनीतिक ऋषि और विश्व के महान पुरुषों में मानता हूं। मेरे मानने से वे महान नहीं होंगे। वे अपने आप में महान थे। यदि हम उनकी महानता न समझ पावें तो हम किसी लायक नहीं हैं।

876. प्रश्न—मार्क्स एवं लेनिन के वचनों को पारख सिद्धान्त कहां तक मानता व नहीं मानता है?

उत्तर—इस प्रश्न पर एक शास्त्र लिखना पड़ेगा, तब सम्यक उत्तर होगा। यहां किंचित झलकी दी जा सकती है।

मेरी जानकारी में जहां तक विश्व में राजनीतिक पार्टियां हैं, वे दार्शनिक विचारों से विहीन हैं। एक मार्क्सवादी पार्टी है जिसमें अपना ठोस दर्शन है। उसके दर्शन में संसार की सत्यता, साथ-साथ उसकी गतिशीलता का

मार्मिक एवं तथ्यपूर्ण चिन्तन है। उसके दर्शन में जड़ से सर्वथा भिन्न चेतन का अस्तित्व नहीं माना गया। उसके ख्याल से चेतन जड़ तत्त्वों का गुणात्मक परिवर्तन है, जो पारख सिद्धान्त के अनुसार सर्वथा गलत है। इसका समाधान मेरे लिखे 'कबीर दर्शन' के तीसरे अध्याय के 'चेतन अस्तित्व' सन्दर्भ में देखा जा सकता है।

मार्क्स एवं लेनिन की अर्थव्यवस्था स्तुत्य है, किन्तु उसका आधार हिंसा नहीं, कानून होना चाहिए, ऐसा पारख सिद्धान्त मानता है। आज मार्क्स का नाम न लेकर भी समाजवाद का गुणगान सारा विश्व कर रहा है। प्रबुद्ध पूंजीपति भी चार लोगों के बीच समाजवाद को ही अच्छा कहता है। वह मोह-वश भले स्वयं नहीं चल पाता है, परन्तु अपनी बुद्धि में समाजवादी अर्थव्यवस्था को सही समझता है।

877. प्रश्न—सुना जाता है कि उत्तराखंड की गुफाओं में कहीं-कहीं हजार-हजार वर्षों के संत अभी मौजूद हैं। यह क्या सच है?

उत्तर—बिलकुल असत्य है। भारत का सबसे पुराना ग्रन्थ ऋग्वेद है, उसमें भी सौ वर्ष जीने की प्रार्थना की गयी है "जीवेम शरदः शतम्" (ऋग्वेद 7/66/16)। कोई-कोई सवा सौ वर्ष तक जी जाते हैं। कहीं अपवाद स्वरूप इससे दस-बीस वर्ष और अधिक जीते सुना जाता है, बस।

878. प्रश्न—सद्गुरु कबीर को बावन कसनियां दी गयी हैं, ऐसा लिखा है। क्या यह सत्य है?

उत्तर—बावन कसनियों में अतिशयोक्तियां बहुत हैं। सबका शरीर कच्चे साज का है। वह एक मर्यादा तक चोट झेल सकता है। कबीर साहेब की बड़ाई करने के चक्कर में उनके शरीर को भी अजर-अमर मान लिया गया है जो एक भोलापन है। हां, यह सत्य हो सकता है कि कबीर देव अपने क्रांतिकारी विचारों के कारण तात्कालिक शासन द्वारा सताये गये हों, परन्तु वे अपनी निर्भीकता, सत्यता, क्षमाशीलता एवं संतगुण से विजयी रहे हों और शासन को उनके सामने झुक जाना पड़ा हो।

879. प्रश्न—क्या कबीर साहेब ऋद्धि-सिद्धि सम्पन्न थे?

उत्तर—ऋद्धि-सिद्धि जो चमत्कारिक ढंग से माना है, वह तो भ्रम है और हजारों वर्षों से झूठा प्रचार है। तप और सद्गुण सम्पन्न पुरुषों के पास ही सफलता रहती है और वही ऋद्धि-सिद्धि है। यह सद्गुरु के पास थी ही। सद्गुरु कबीर अपने निराले विचारों के अकेले थे। परन्तु उन्हीं के समय से उनके लाखों अनुगामी होते गये।

880. प्रश्न—क्या कबीर साहेब योगाभ्यासी थे?

उत्तर—बिलकुल थे। उन्होंने हठयोग को भी साधा था; परन्तु उसे उपयोगी न समझकर छोड़ दिया। वे मनोनिग्रही, इन्द्रियजयी तथा महान योगी थे।

881. प्रश्न—दुख न चाहते हुए दुख क्यों भोगना पड़ता है?

उत्तर—क्योंकि बुरे कर्म कर चुके हैं।

882. प्रश्न—क्या आज के युग में सच बोलकर कोई सुख से जी सकता है?

उत्तर—तुम अपने लिए दूसरे से सत्य का व्यवहार चाहते हो, अत: तुम भी दूसरे के साथ सत्य का व्यवहार करो, यही विश्व का शाश्वत नियम है। इसका उल्लंघन करने वाला दुख पायेगा। आज के युग में भी इसी की आवश्यकता है।

883. प्रश्न—भगवान कहां रहता है? यदि सब जगह रहता है, तो पापकर्म क्यों नहीं रोकता?

उत्तर—तुम्हारी अन्तरात्मा ही भगवान है और वह तुम्हें पाप से रोकती है। अत: अन्तरात्मा की आवाज सुनो तथा उसके अनुसार चलो। बाहर कहीं भगवान नहीं।

884. प्रश्न—क्या मन के बिना 'मैं हूं' कहा जा सकता है और विदेहमुक्ति में 'मैं हूं' इसका भास होगा?

उत्तर—'मैं हूं' कहने के लिए मन चाहिए। विदेहमुक्ति में 'मैं हूं' का भास नहीं होगा। मन के बिना न वचन का उच्चारण सम्भव है और न संकल्प। शुद्ध चेतन मात्र शांत स्वरूप है।

885. प्रश्न—दुर्घटना या दैवी प्रकोप से हजारों की मौत एक साथ हो जाती है। क्या ऐसी अवस्था में सबका प्रारब्ध एक-सा रहता है?

उत्तर—मौत के लिए रहता ही है। कर्म की गति गहन है। मनुष्य को सोचने और करने की बात है अच्छे कर्म। बाकी उलझनें छोड़ दो।

886. प्रश्न—''जो काशी तन तजै कबीरा, तो रामहि कहु कौन निहोरा।'' ऐसा कबीर साहेब ने क्यों कहा?

उत्तर—काशी में मरने से मोक्ष होता है इस अन्धविश्वास को दूर करने के लिए साहेब ने ऐसा कहा। वस्तुत: मोक्ष किसी स्थान विशेष की वस्तु नहीं है; किन्तु उसकी साधना है वासना-क्षय करना।

887. प्रश्न—परिवार में कोई दुष्कर्मी है, तो उसके साथ रहना चाहिए या उससे अलग हो जाना चाहिए?

उत्तर—जितना सम्भव हो निभाना चाहिए। उसे सही रास्ते पर लाने का प्रयत्न करना चाहिए। ज्यादा विघ्न होने पर अलग होना ही पड़ता है।

888. प्रश्न—गायत्री शक्तिपीठ हरिद्वार के संस्थापक पण्डित श्रीराम शर्मा ने लिखा है कि मैं पहले तीन जन्मों में कबीर, समर्थ रामदास एवं रामकृष्ण परमहंस था। मैंने तीन बार हिमालय में जाकर सप्त-ऋषियों से मिलकर बातचीत की है। मैं वहां आकाश में उड़कर गया हूं आदि। क्या यह सत्य है?

उत्तर—यह सब पूरा का पूरा काल्पनिक है। आश्चर्य होता है श्री शर्मा जी के साहस पर! इतना तो साफ होता है कि वे सन्त कबीर, समर्थ रामदास एवं रामकृष्ण परमहंस को ज्यादा प्रासंगिक मानते हैं, इसलिए अपने आपको उनसे जोड़ते हैं। परन्तु ऐसा असत्य का प्रचार उनको नहीं करना चाहिए।

889. प्रश्न—पाप और पुण्य दोनों बेड़ियां हैं, एक लोहे की दूसरी सोने की, फिर कल्याण का रास्ता कौन कर्म है?

उत्तर—सार यह है कि पाप कर्म का एकदम त्याग करो; पुण्य कर्म करो, परन्तु उसका अहंकार न करो, अन्यथा वह भी बन्धन बन जायेगा। अहंकार त्यागपूर्वक सत्कर्म ही कल्याण का पथ है।

890. प्रश्न—पूर्वजन्म की याद करने का क्या साधन है?

उत्तर—इसी जीवन की यादें जीव को परेशान करती रहती हैं, पूर्वजन्म की याद करके क्या करोगे। काम की बात करो, व्यर्थ की नहीं। वैसे पूर्वजन्म की याद करने का कोई साधन नहीं है और न उसकी आवश्यकता है।

891. प्रश्न—रामायण में और मानस में क्या अन्तर है?

उत्तर—राम-अयन = राम का रास्ता, अयोध्या से लंका तथा लंका से अयोध्या तक की यात्रा कथा—रामायण है। इस प्रकार समस्त रामकथाएं रामायण हैं। वैसे वाल्मीकि रामकथा को रामायण कहते हैं और गोस्वामी जी कृत रामकथा को रामचरित मानस। दोनों में बड़ा अन्तर है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार श्रीराम एक उत्तम मनुष्य थे, परन्तु रामचरित मानस में गोस्वामी जी ने उन्हें विश्व का हर्ता-कर्ता बना डाला है।

892. प्रश्न—गुरुमन्त्र एवं दीक्षा क्या है, क्या इसे लेना आवश्यक है?

उत्तर—सद्गुरु द्वारा स्व-स्वरूप और रहनी का यथार्थ बोध होता है यही गुरुदीक्षा है, तथापि औपचारिक ढंग से भी गुरुदीक्षा लेना साधक का आवश्यक कर्तव्य है। इससे गुरु और शिष्य का सम्बन्ध प्रगाढ़ होता है। सच्ची रहनी और दिव्यज्ञान से सम्पन्न सद्गुरु की शरण के बिना व्यक्ति का जीवन आध्यात्मिक ऊंचाई पर नहीं चढ़ता। जैसे विद्वान, डाक्टर, वकील, वैज्ञानिक आदि बनने के लिए तत्सम्बन्धी गुरु की आवश्यकता है, वैसे आत्मकल्याण के लिए सद्गुरु की आवश्यकता है।

893. प्रश्न—समाजवाद क्या है?

उत्तर—राष्ट्र के हर मनुष्य का मौलिक मूल्य बराबर मानना और हर मनुष्य को उसकी अपनी योग्यता के अनुसार हर दिशा में प्रगति करने का अवसर देना—समाजवाद है।

894. प्रश्न—राम का तो वनवास हुआ था, सीता जी अपने पति की सेवा में उनके साथ गयी थीं। लक्ष्मण का क्या स्वार्थ था जो वे राम के साथ वन को गये?

उत्तर—लक्ष्मण अपने स्वार्थ के लिए नहीं गये थे, किन्तु वे निष्काम भाव से अपने भाई तथा भाभी की सेवा में गये थे।

895. प्रश्न—शाकाहारी होने में क्या लाभ है?

उत्तर—मनुष्य विवेकशील प्राणी है। उसका आहार सात्विक होना ही चाहिए। मांस-मछली के आहार में हिंसा है। वह गरिष्ठ तथा तामसी है, रोगमय है, असभ्यतापूर्ण है। अण्डा भी तामसी तथा गंदा भोजन है। अन्न, फल, शाकादि सात्विक, सुपाच्य एवं हितप्रद हैं।

896. प्रश्न—पत्नी तथा परिवार से कैसा व्यवहार करूं?

उत्तर—प्रेम, समता, त्याग, सदाचार एवं विश्वास का।

897. प्रश्न—दुष्ट से कैसा व्यवहार करूं?

उत्तर—मौन एवं उपेक्षा का।

898. प्रश्न—हमें मीठा वचन प्रिय तथा कड़वा बुरा लगता है, ऐसा क्यों? हमें कड़वा भी प्रिय लगना चाहिए।

उत्तर—कड़वा को प्रिय बना देना ही तो मानवता है। इसके लिए अभ्यास करो।

899. प्रश्न—कुछ लोग कहते हैं कि कर्म से कुछ नहीं होता, भगवान ही सब कुछ करता है, क्या सच है?

उत्तर—जीव के द्वारा किये गये कर्म ही उसका जीवन बनाते हैं। जीव जैसा करता है वैसा फल पाता है। इसमें भगवान को कोसना युक्तिविरुद्ध है।

900. प्रश्न—पिता कर्ज लेकर मर गये। पीछे पुत्र ने कर्ज को लौटा दिया। पिता को ऋणमुक्ति मिलेगी कि नहीं? कहा जाता है कि पिता के लिए जो कुछ भी किया जाता है सब अपने लिए ही है। क्या समझें?

उत्तर—पिता का लिया हुआ कर्ज पुत्र को लौटाना ही चाहिए। यदि पुत्र समर्थ होकर भी नहीं लौटाता है, तो वह अपराधी है। पिता की भावना यदि कर्ज लौटाने की थी, तो वह ऋणमुक्त ही है; किन्तु यदि पुत्र नहीं लौटाता है तो उसको अपराध लगेगा।

901. प्रश्न—क्या समर्थ व्यक्ति को दोष नहीं लगता?

उत्तर—समर्थ वह है जो दोष के कामों से बचे।

902. प्रश्न—पचास वर्ष गृहस्थी में रहकर यदि व्यक्ति विरक्त होता है, तो क्या वह मोक्ष प्राप्त कर सकता है?

उत्तर—बिलकुल प्राप्त कर सकता है। उसके भक्ति, ज्ञान, वैराग्य तीव्र होने चाहिए।

903. प्रश्न—दान देकर उसकी चर्चा करने से क्या उसका महत्त्व घट जाता है?

उत्तर—जितना बन सके, देकर चुप रहो।

904. प्रश्न—सहायता करने की मेरी आदत है। यदि यही सहायता किसी महिला की की जाती है तो लोग शंका करते हैं। क्या करें?

उत्तर—उसके सम्बन्ध से दूर रहने से शंका निर्मूल हो जायेगी। सच्चाई छिपती नहीं।

905. प्रश्न—भक्ति के बाद किस भूमिका पर ठहराव होगा?

उत्तर—ज्ञान पर। स्वरूपस्थिति ही ठहराव की अन्तिम भूमिका है।

906. प्रश्न—सदाचारहीन साधु वेषधारी बड़ा है कि सदाचारी गृहस्थ?

उत्तर—सदाचारी बड़ा है चाहे वह जिस वेष में हो।

907. प्रश्न—मैं अच्छे पथ पर चलता हूं तो भी सताया जाता हूं, क्यों?

उत्तर—तो भी अच्छे पथ पर चलो, यही सुखद है।

908. प्रश्न—'कहहिं कबीर सत सुकृत मिले तो बहुरि न झूले आन', सत-सुकृत क्या है?

उत्तर—सत अपना चेतन स्वरूप है और सुकृत पवित्र रहनी है। यदि व्यक्ति को स्वरूपज्ञान हो जाये और उसकी रहनी पवित्र हो जाये तो वह संसारचक्र में नहीं पड़ेगा।

909. प्रश्न—चित्त की चंचलता को मिटाने का क्या उपाय है?

उत्तर—अनासक्ति। व्यक्ति जितना अनासक्त होगा उतना वह समाधि में प्रवेश कर सकेगा।

910. प्रश्न—आसक्ति का लक्षण क्या है और जीव को बांधने की प्रबल बेड़ी क्या है?

उत्तर—जो मन से न उतरे वही आसक्ति है और यही जीव की बेड़ी है। यदि मन से ज्ञान, भक्ति, वैराग्य न उतरे तो यह मोक्ष का कारण बन जायेगा।

911. प्रश्न—सद्ग्रंथ में चेतन को भी पुरुष कहा जाता है, क्यों?

उत्तर—स्त्री और पुरुष वाले पुरुष का अर्थ दैहिक है; किन्तु जहां चेतन को पुरुष कहा जाता है वहां अर्थ है शरीर रूपी पुर में शयन करने वाला पुरुष चेतन।

912. प्रश्न—क्या सिद्ध पुरुष पुण्यकर्म भी नहीं करते?

उत्तर—वे जो कुछ करते हैं, सब पुण्य ही होता है। किन्तु अनासक्त पुरुष के पुण्यकर्म उसे बन्धन नहीं देते।

913. प्रश्न—तुलसीदास ने जन्मते ही 'राम' नाम उच्चारण किया और उनके 32 दांत थे और तुलसीदास ने जब रामचरित मानस लिखकर काशी विश्वनाथ मन्दिर में रख दिया तो सुबह उस पर सत्यम् शिवम् सुन्दरम् लिखा मिला। कहा जाता है उसे शिवजी ने लिखा था। यह सब कहां तक सत्य है?

उत्तर—ये सारी बातें असम्भव हैं। जन्मते ही बच्चा न राम कह सकता है, न उसके मुख में बत्तीस दांत हो सकते हैं और न कोई ऐसा शिव है जो मानस ग्रन्थ पर हस्ताक्षर कर दे। धर्म, महात्मा, गुरु, ईश्वर, शास्त्र आदि के नाम पर चाहे जितना झूठ बोला जाये, सब प्रामाणिक हो जाता है।

914. प्रश्न—वैराग्य कब उत्पन्न होता है?

उत्तर—जब सब समय सब कुछ की क्षणभंगुरता का बोध होने लगता है।

915. प्रश्न—अपने आप पर संयम कैसे करें?

उत्तर—संयम का फल शांति है और शांति संसार का सबसे बड़ा सुख है—ऐसा निश्चय होने पर अपने आप संयम होने लगेगा।

916. प्रश्न—यदि लड़का पिता को सम्मान देता है और पिता लड़के से घृणा करता है, तो लड़के को क्या करना चाहिए?

उत्तर—जितना सम्भव हो पिता को सन्तोष देने का प्रयत्न करना चाहिए। अन्यथा पुत्र को अपना स्वतन्त्र रास्ता चुनना पड़ेगा।

917. प्रश्न—क्या अपने आपको जानने के लिए धनवान बनना जरूरी है?

उत्तर—धन जीवन-निर्वाह के लिए जरूरी है और अपने आपको जानने के लिए जिज्ञासा, सत्संग एवं संयम जरूरी है।

918. प्रश्न—मंजिल तक पहुंचने के लिए रास्ता क्या है?

उत्तर—विनम्रतापूर्वक खोज।

919. प्रश्न—जीवनपर्यन्त सत रास्ते पर कैसे चलूं?

उत्तर—सत से ही पूर्ण तृप्ति मिल सकती है, यह लाभ निश्चय होने से।

920. प्रश्न—सत्य ही ईश्वर है, इसका तात्पर्य क्या है?

उत्तर—तात्पर्य साफ है। सत्ता श्रेष्ठ है। सत्ता सत्य है। सत्ता के दो रूप हैं एक जड़ दूसरा चेतन। जड़ न अपने आप को जानता है और न दूसरे को किंतु चेतन स्वयं को भी जानता है और जड़ को भी। इसलिए चेतन परम सत है। वही अपना स्वरूप है। वही ईश्वर है। सबका ज्ञाता, द्रष्टा, मन्ता, व्याख्याता ही सर्वोपरि है।

* * *

921. प्रश्न—जब मैं तन, मन तथा वचन सहित गुरु को समर्पित हो गया, तो मेरा क्या रहा?

उत्तर—स्वरूपज्ञान एवं बोध, जो कल्याणकर है।

922. प्रश्न—जीव साकार है या निराकार?

उत्तर—निराकार शून्य को कहते हैं। जीव शून्य नहीं, किन्तु सत्तावान द्रव्य है; इसलिए वह निराकार नहीं। किन्तु वह ऐसा साकार नहीं कि आंखों से दिखे या इन्द्रियगोचर हो। जीव ज्ञानाकार है।

923. प्रश्न—क्या भक्ति मार्ग में भी नारियों से भेद-भाव रखा जाता है?

उत्तर—नर-नारी समान कल्याण के अधिकारी हैं; किन्तु नर और नारी दोनों को संयमित रहने के लिए एक दूसरे के संगदोष से बचना चाहिए। पति-पत्नी की बात दूसरी है, किन्तु यदि उनकी भी अधिक संयम में रहने के लिए दृष्टि है, तो एक दूसरे के संगदोष से बचना पड़ेगा। यह कोई एक दूसरे से घृणा करने की बात नहीं, किन्तु दोनों की प्रतिष्ठा की बात है।

924. प्रश्न—स्वप्न दोष क्यों होता है?

उत्तर—जागृति में विषयचिंतन से, अधिक खाने से, ज्यादा गरिष्ठ और ज्यादा गरम खाने आदि से। अत: भोजन हलका तथा जल्दी पचने वाला सात्विक खाना चाहिए और विषय-चिंतन से बचना चाहिए।

925. प्रश्न—एक दूसरे को दुख क्यों देते हैं?

उत्तर—क्योंकि वे मनुष्य के आकार में पशु हैं। जो हिंसा में प्रेम रखता है वह पशु ही है।

926. प्रश्न—ब्रह्मचर्य शब्द का अर्थ क्या है?

उत्तर—'ब्रह्म' का अर्थ बड़ा है, 'चर्य' कहते हैं आचरण को। बड़ा आचरण ही ब्रह्मचर्य है। यह कोई सम्प्रदाय विशेष का नहीं, किन्तु सार्वभौमिक भाव है।

927. प्रश्न—कहते हैं कि पांच वर्ष की उम्र तक बच्चों को पाप-पुण्य कर्म नहीं लगते, क्योंकि वह तब तक अंजान रहता है, परन्तु यदि सयाना होकर अंजान हो तो लगेगा कि नहीं?

उत्तर—यदि बच्चे की तरह ही अंजान है तो क्यों लगेगा!

928. प्रश्न—क्या महर्षि वाल्मीकि सचमुच मरा-मरा कहकर सिद्धि लाभ किये थे?

उत्तर—यह काल्पनिक कथा है। इस कथा का वाल्मीकि-रामायण में कोई आधार नहीं है। वाल्मीकि के काल में नामजप-महिमा की सनक नहीं थी। यह पीछे के कवियों की कल्पना है।

929. प्रश्न—ग्रंथों में हनुमान के तीन पिता बताये गये हैं—पवन, शंकर एवं केशरी। विदित है कि किसी व्यक्ति का एक ही पिता होता है। फिर हम किसे हनुमान का पिता मानें?

उत्तर—हनुमान जी के पिता कौन हैं इसका पता न लगने से आपकी कोई हानि नहीं है। हनुमान जी के अच्छे गुणों से प्रेरणा लो, इतना काफी है। हनुमान जी के पिता का ठीक पता न लगने से उनकी कोई तौहीन नहीं है।

930. प्रश्न—क्या साधु-साधुनियों का साथ रहना, बसना, सोना आदि ठीक है?

उत्तर—बहुत गलत है। साधुनियों के मठ एवं समाज में पुरुष नाम का एक लड़का भी नहीं होना चाहिए तथा साधुओं के मठ एवं समाज में नारी नाम की एक छोटी लड़की भी नहीं होना चाहिए। खुले रूप में बहुतों के बीच सत्संग के लिए मिलना ठीक है। बाकी सम्बन्ध का त्याग।

931. प्रश्न—'गुरु गोविन्द दोऊ खड़े' के अनुसार क्या गुरु से पृथक गोविन्द भी है?

उत्तर—गुरु उपदेष्टा है और गोविन्द उपदेश का विषय है। वह गोविन्द गाय चराने वाला कृष्ण नहीं है, किन्तु अपना आत्म स्वरूप चेतन तत्त्व है। यहां गोविन्द का अभिधा (शब्दिक) अर्थ नहीं है, किन्तु लक्षणा अर्थ है।

932. प्रश्न—क्या अन्तर्जातीय शादी बुरी बात है?

उत्तर—यदि लड़के-लड़की के स्वभाव, गुण, कर्म मिलते हैं, तो कोई बुरी बात नहीं। इससे दहेज-दानव से भी छुटकारा मिल सकता है जो एक सामाजिक अभिशाप है। हां, वह अपने संस्कारों के कारण अटपटी लगती है, और इसकी अपनी समस्याएं भी हैं।

933. प्रश्न—राम, कृष्ण तथा महादेव का जीवन काल क्या है?

उत्तर—महादेवादि त्रिदेव तो काल्पनिक देवता लगते हैं जो तम, रज, सत, गुण के प्रतिनिधि स्वरूप गढ़ लिए गये हैं। श्री कृष्ण के विषय में ऋग्वेद (8/96/13-16) में तथा छांदोग्य उपनिषद् (3/17/6) में साफ चर्चा है। श्री राम के लिए वेद तथा वैदिक साहित्य में कहीं साफ चर्चा नहीं है। ऋग्वेद (10/93/14) में एक जगह पृथु, वेन, दुःसीम के साथ असुर (बलवान) राजा राम की चर्चा है; परन्तु उनके अयोध्याधीश होने के विषय में वहां कोई अन्य लक्षण नहीं दिये गये हैं। शतपथ ब्राह्मण तथा बृहदारण्यक उपनिषद् में जनक वैदेह की खूब चर्चा है, परन्तु सीता और राम का कहीं उल्लेख नहीं है। हां, महाभारत में श्रीकृष्ण की तथा वाल्मीकि रामायण में श्रीराम की कथा है।

श्रीकृष्ण वैदिककाल के हैं। श्रीराम यदि उक्त ऋग्वेद वर्णित हैं तो वे भी वैदिककाल के हैं। वैसे महाभारत तथा रामायण ईसा पूर्व पांच सौ से तीन सौ

वर्ष की रचना है। प्रक्षेप तो उसमें ईसा के बाद बहुत काल तक होते रहे।

934. प्रश्न—प्राकृतिक सौन्दर्य पर मन आकर्षित क्यों होता है? मोह अपने लोगों पर होता है, दूसरों पर क्यों नहीं होता?

उत्तर—प्राकृतिक सौन्दर्य का अपना महत्त्व है। उससे लाभ लो, आकर्षित होने की कोई आवश्यकता नहीं। व्यवहार के लिए अपना और पराया मानना पड़ता है, मोह करना तो अपना भोलापन है। संसार की वस्तुओं और व्यक्तियों का सदुपयोग करो, मोह और वैर नहीं।

935. प्रश्न—सत्य के पथ पर कठिनाइयों का अधिक सामना क्यों करना पड़ता है?

उत्तर—सत्य-पथ में तत्काल कठिनाइयां लगती हैं, फल उसका अमृत है; और असत्य-पथ में तत्काल सरलता लगती है, परन्तु उसका फल दुखपूर्ण है।

936. प्रश्न—जब चन्द्रशेखर आजाद के माता-पिता के ऊपर जीवनयापन की समस्या आ गयी, तो उनके रिश्तेदार आजाद के पास पैसे लेने गये। आजाद ने उन्हें ठुकरा दिया। इस प्रकार मातृ-सेवा के स्थान पर उन्होंने देश-सेवा को महत्त्व क्यों दिया?

उत्तर—परिवार-सेवा से उठकर देश-सेवा का कर्तव्य बड़ा ऊंचा त्याग है।

937. प्रश्न—स्वर्ग और नरक का क्या कहीं अस्तित्व है या काल्पनिक हैं?

उत्तर—मन की मलिनता नरक है और मन की स्वच्छता स्वर्ग है। इसके अलावा न नरक है न स्वर्ग।

938. प्रश्न—क्या हंस नाम का पक्षी होता है जो दूध और पानी अलग कर देता है?

उत्तर—हंस पक्षी होता है। वह दूध और पानी अलग-अलग कर पाता है कि नहीं, इसका पता नहीं। कवि-जगत में इसका उदाहरण चलता है। सार लेना चाहिए। मनुष्य नीर-क्षीर विवेकी सच्चा हंस है।

939. प्रश्न—आत्मा को अजन्मा और निर्लिप्त क्यों कहते हैं, जबकि उसके बिना न किसी का जन्म होता है न शरीर का संचालन? कर्ता-भोक्ता कौन?

उत्तर—कोई भी मूल वस्तु अजन्मा एवं नित्य होती है। मूल जड़ द्रव्य भी अजन्मा एवं नित्य है। जीव एवं आत्मा मूल है, इसलिए अजन्मा है। देह में वही कर्ता-भोक्ता है; परन्तु स्वरूपत: निर्लिप्त है।

940. प्रश्न—देवी-देवताओं की मनौती से किसी-किसी की कामना सफल हो जाती है, ऐसा क्यों?

उत्तर—यह केवल तुक है। किसी स्त्री को गर्भ होने का समय आ गया और उसी समय उसने मनौती कर दी, तो लगता है मनौती से गर्भ रहा। तुम लोगों को रोज पुत्र, धन, नीरोग्यता, विजय आदि के लिए आशीर्वाद देते रहो, तो कहीं-न-कहीं तुक लगने पर फिट हो जायेगा। अतएव कल्पित देवी-देवताओं की मनौती से कुछ नहीं होता।

941. प्रश्न—क्या बिना गुरु के कल्याण नहीं होता? फिर गौतम बुद्ध तथा सद्गुरु कबीर के गुरु कौन थे?

उत्तर—बिना गुरु के हमें और तुम्हें इतनी भी अक्ल न आती कि उक्त प्रश्न एक कागज पर लिख सकें। आलारकालाम जैसे सांख्यवादी ऋषियों से महात्मा बुद्ध ने बहुत कुछ सीखा था। सद्गुरु कबीर ने भी अपने समय के संतों-गुरुओं से बहुत कुछ सीखा होगा। चाहे जिस तरह, स्वामी रामानन्द उनके गुरु प्रसिद्ध ही हैं।

942. प्रश्न—पाठ्यक्रम में कबीर के पत्नी-बच्चे होना पढ़ाया जाता है। यदि कबीर विरक्त थे तो सरकार को बाध्य करें कि वह अपने पाठ्यक्रम से यह दोष हटाये, अन्यथा आप अपना मन्तव्य गलत समझें।

उत्तर—कबीर साहेब के विषय में गृहस्थ चित्रण पाठ्यक्रम से हटना चाहिए। यह एक बड़े जनसमूह के आन्दोलन का काम है। इसे एक व्यक्ति नहीं कर सकता। पूरा कबीरपंथ कबीर साहेब को विरक्त मानता है। उनके प्रामाणिक ग्रन्थ बीजक से भी उनका रूप विरक्त का बनता है। देखो, कब ऐसा प्रयास हो सके।

रही यह बात कि जो सरकार के पाठ्यक्रम में हो उसके विरुद्ध हम अपना मन्तव्य न रखें, यह कहां का न्याय है। सरकार के पाठ्यक्रम में जितना कूड़ाकबाड़ इकट्ठा है उसे विवेकी कैसे मान सकते हैं। सरकार के पाठ्यक्रम में तो यह भोली धारणा भी है कि मनुष्य बन्दर की सन्तान है। अधिकृत हिन्दू समाज मानता है कि श्रीकृष्ण के हजारों पत्नियां थीं और गर्ग-संहिता के अनुसार खरबों पत्नियां। वे परस्त्रियों के साथ रास करते थे, जबकि वेद, उपनिषद्, महाभारत में जहां श्रीकृष्ण की चर्चा है रास की गंध भी नहीं है। ये लेखक लोग क्या-क्या लिख सकते हैं कहा नहीं जा सकता है।

943. प्रश्न—क्या नल-नील समुद्र पर पत्थर तैराकर पुल बांध दिये? यदि यह काल्पनिक है तो असत्य कथा क्यों लिखी गयी?

उत्तर—पुल वाली कथा एकदम काल्पनिक है। ऐसी कल्पनाएं महाकाव्यों में रहती ही हैं। यदि श्रीराम का लंका में जाकर युद्ध करना सत्य है तो बीच में कहीं थोड़ा पानी की नाभि (डमरू मध्य) रही होगी और वे उसे पत्थर-मिट्टी से पाटकर निकल गये होंगे।

944. प्रश्न—स्वरूपबोध से पूर्व इस जीवन में किये हुए कर्म-बन्धनों से छुटकारा कैसे मिलेगा?

उत्तर—वर्तमान के बोध-वैराग्य एवं अनासक्ति रहनी के बल से।

945. प्रश्न—तीनों तापों से छुटकारा कैसे हो?

उत्तर—अपने चेतन स्वरूप अविनाशी आत्मा को समझकर उसी में स्थित होने से सभी तापों का अन्त है। मैं का मैं में स्थित होना ही परम एवं अनन्त शीतलता है।

946. प्रश्न—आवागमन से छुटकारा मिल जाने का क्या प्रमाण है?

उत्तर—स्वरूपस्थिति। अपने स्वरूप में स्थित हो जाने पर यह शंका नहीं रह जायेगी।

947. प्रश्न—परोपकार करने में माता-पिता का रुख यदि आड़े आये तो क्या करें?

उत्तर—माता-पिता का रुख पालते हुए यथासम्भव परोपकार करो।

948. प्रश्न—मुझे सन्त समाज में भी साधना का समय पूर्ण रूप से नहीं मिलता, तो क्या एकांतवास में सफल हो सकता हूं?

उत्तर—जो वर्तमान में साधना नहीं कर सकता वह भविष्य में नहीं कर सकता। जो सन्त समाज में रहकर साधना में सफल नहीं होता, वह एकांत में जाकर अधिक गड़बड़ी में पड़ सकता है। सन्त समाज का सेवन करते हुए समय-समय से एकांत सेवन करो।

949. प्रश्न—कोई गुरु धर्म मानकर हिंसा का मार्ग चलाया। पीछे वह उसे गलत समझकर छोड़ दिया; परन्तु उसके अनुयायी उसके पूर्व उपदेश से हिंसा करते रहे, तो क्या उस गुरु का उद्धार हो जायेगा?

उत्तर—जिसने मन, वचन तथा कर्म से हिंसा का त्याग कर दिया है, वह निश्चित ही उद्धार का पात्र है।

950. प्रश्न—बैगा ने बताया कि गुमा हुआ बैल दक्षिण दिशा में खोजो, मिलेगा। सचमुच दक्षिण दिशा में मिला। क्या बैगा (सोखा) इतना ज्ञाता होता है?

उत्तर—ऐसे लोग चालाक होते हैं। वे कुछ अन्दाज लगाकर कहते हैं। कभी-कभी तुक से बात बैठ जाती है। वैसे बैगा का मन्त्र और सिद्धि सब जालसाजी है।

* * *

951. प्रश्न—भगवान क्या है तथा उसका प्रकट होना क्या है?

उत्तर—पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, ज्ञान, वैराग्य तथा तेज—इन सब का नाम भग है। जो इनसे सम्पन्न हो वह भगवान है। यथा—

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः।
ज्ञान वैराग्योश्चैव षण्णां भग इतिरणा॥

धनवान, शीलवान, बलवान आदि शब्दों में वान प्रत्यय लगे हैं। वान का अर्थ है धारण करने वाला। जो धन को धारण करे वह धनवान, जो शील को धारण करे वह शीलवान। इसी प्रकार जो भग (उक्त छह ऐश्वर्यों) को धारण करे वह भगवान।

भगवान मनुष्य से अलग नहीं, जो प्रगट होता हो। श्रेष्ठ मनुष्य ही भगवान है।

952. प्रश्न—यदि मन में गलत भावना पैदा हुई, किन्तु उसके अनुसार काम नहीं किया, तो भावना मात्र से क्या बुरा हुआ?

उत्तर—बुरी भावना उठते ही उन्हें दूर करो। यदि वे मन में बनी रहेंगी, तो उस प्रकार काम हो ही जायेंगे।

953. प्रश्न—स्त्रियों को किस दृष्टि से देखना चाहिए?

उत्तर—सभी नारियों को माता, बहन तथा पुत्री के समान देखना चाहिए। यदि इस भाव में अपने आपको रख सके तो सर्वोत्तम है। यदि आदमी किसी एक नारी से विवाह कर ले तो भी उसको छोड़कर अन्य सभी नारियों को माता, बहन तथा पुत्री के समान समझे।

954. प्रश्न—मूर्तिपूजकों में भी सिद्ध पुरुष हुए हैं, फिर मूर्तिपूजा नगण्य कैसे?

उत्तर—सभी मतों में अच्छे पुरुष होते हैं। साधक उपासना का कोई भी आलम्बन बनावे, यदि उसकी भावना तीव्र है तो उसे उससे कुछ न कुछ लाभ होता ही है। परन्तु कोई मूर्ति पूजा करके सिद्ध नहीं हो सकता। सिद्धि का कारण उसके विवेक, वैराग्य, त्याग आदि की तीव्रता है। मूर्तिपूजा तो बचकाने मन का सात्विक खिलौना है।

955. प्रश्न—मुकदमा लड़ने वाला साधु क्या उपदेश दाता सद्गुरु मानने योग्य है?

उत्तर—विवेकवान मठाधीश महात्मा अपनी तरफ से व्यर्थ मुकदमा नहीं करते। कहीं सम्पत्ति के विषय में विवाद होने पर वे समझौता-समाधान कर लेते हैं। यदि मुकदमा आ ही गया, तो आश्रम की व्यवस्था के लिए उन्हें देखना पड़ेगा; क्योंकि मठाधीश साधु की यह ड्यूटी है कि वह आश्रम की सम्पत्ति की सुरक्षा रखे। यदि अन्य आचरण उनके अच्छे हैं तो वे गुरु मानने योग्य हैं। तुम्हें समझना चाहिए कि तुमसे तो वे बड़े ही हैं।

956. प्रश्न—क्या वेश्या का मोक्ष हो सकता है?

उत्तर—बिलकुल हो सकता है, बशर्ते वह वेश्यावृत्ति एवं विषय-वासनाओं का त्यागकर स्वरूपज्ञान एवं विवेक में दृढ़ हो जाये।

957. प्रश्न—पिता जी परम्परागत भजन-पूजन करते हैं, पुत्र पारखी है, तो पिता के विचारों का खण्डन करे या न करे?

उत्तर—पुत्र को चाहिए कि पिता की सेवा करे। उन्हें उनकी अपनी मान्यता के अनुसार चलने दे। उनके विचारों का खण्डन न करे। हां, यदि वे सुनने में प्रेम रखें तो उन्हें आदरपूर्वक निर्णय के वचन सुनाये और उतना ही सुनाये जितना वे खुशी से सुन सकें। शीलपूर्वक निर्णय के द्वारा किसी को सुझाव देने से सफलता हो सकती है।

958. प्रश्न—क्या हनुमान जी पूंछ वाले वानर थे?

उत्तर—वे भारत के आदिवासी मानव थे। उनका गोत्र वानर था। अर्थात उनकी परम्परा में वानर के चिह्न ध्वजा तथा मकानादि पर रखे जाते थे। इसी प्रकार जामवन्त रीछ नहीं, रीछ-चिह्न रखने वाले तथा जटायु गृध-चिह्न रखने वाले मानव थे। इन सबके व्यवहार मानवीय थे फिर ये मानवेतर कैसे हो सकते हैं?

959. प्रश्न—कुछ प्राप्त होने पर लोग कहते हैं कि ईश्वर या गुरु की कृपा से मुझे यह मिला है। यह कहां तक सत्य है?

उत्तर—सब कुछ जीव को अपने कर्म से ही मिलता है। ईश्वर या गुरुकृपा कहना एक विनम्रता या तकियाकलाम है।

960. प्रश्न—पाप से घृणा करो, पापी से नहीं, यह बात समझ में नही आती?

उत्तर—दीवार, पेड़, पत्थर पाप नहीं करते। चेतन मानव से ही पाप हो जाते हैं। वही पुण्य भी करता है। कुछ-न-कुछ प्रायः सबसे गलती हो जाती है। इसलिए किसी को घृणा की दृष्टि से देखकर अपने मन को मलिन मत करो। बस, तुम ध्यान रखो कि तुमसे वैसा पाप न हो जाये और जिससे पाप हो गया हो, बन सके तो उसे रास्ते पर लाओ।

961. प्रश्न—क्या ईसा ईश्वर के पुत्र हैं और वे पृथ्वी के पाप को रोकने के लिए आये थे?

उत्तर—यह सब साम्प्रदायिक प्रचार है और असत्य है। वैसे सारे सन्त मनुष्यों को पाप-मार्ग से हटने के उपदेश देते हैं। ईश्वर के अवतार, पैगम्बर, पुत्र आदि की बात अपने मत के प्रचार का हथकण्डा है। संसार के सभी महापुरुष मानव हैं। मानव से श्रेष्ठ कोई भगवान नहीं।

962. प्रश्न—नाम का क्या महत्त्व है?

उत्तर—व्यवहार की सिद्धि के लिए नाम कल्पित किये जाते हैं। सारे नाम मनुष्य के बनाये हैं। कुछ लोग अपने मन को संयत करने के लिए कोई नाम जपते हैं। यह एक सात्विक मनोरंजन है। सारे नाम की कल्पना करने वाला मनुष्य स्वयं है। उसे चाहिए कि वह अपने आप को पहचाने तथा विवेक द्वारा अपने आपको पवित्र-पथ पर गतिशील करे।

963. प्रश्न—कबीर, राम, कृष्ण सब मर गये, तो किसका नाम जपें?

उत्तर—तुम खुद जीवित हो। अपना चरित्र सुधारो। दिवंगत महापुरुषों की अच्छाइयों से प्रेरणा लो।

964. प्रश्न—स्व-स्वरूप को शुद्ध-बुद्ध कहा जाता है, तो शरीर छूट जाने पर शुद्ध के बाद बुद्ध क्या है?

उत्तर—बुद्ध का अर्थ है ज्ञानी। जीव का स्वभाव ही ज्ञान है। वह विदेहावस्था में साधन के अभाव से भले ही कुछ न जाने, परन्तु उसका स्वरूप जो है वह तो रहेगा ही। आग का स्वभाव है जलाना। उसके पास कोई तृण न होने से वह जलाने की क्रिया से रहित है; परन्तु उसका अपना स्वभाव तो रहेगा ही।

965. प्रश्न—स्वसंवेद्य किसे कहते हैं?

उत्तर—जो स्वयं ही जाना जा सके, इसमें दूसरे का सहयोग काम नहीं करता। स्वसंवेद्य = जिसका ज्ञान केवल स्वयं को हो सके।

966. प्रश्न—गृही और निगुरा में क्या अन्तर है?

उत्तर—वैवाहिक जीवन वाले गृही कहलाते हैं, निगुरा वह है जो गुरुभक्त नहीं है। यही रूढ़ अर्थ है। वैसे निगुरा वह है जो सत्य ज्ञान तथा सत्य आचरण से रहित है।

967. प्रश्न—जीव सदा से बन्धन में है या पहले मुक्त था?

उत्तर—यदि जीव पहले मुक्त होते, तो उनके पास बन्धन के साधन न होने से बन्धन में क्यों पड़ते? अतएव जीव अनादिकाल से बन्धन में हैं, यही सही समाधान लगता है। प्रश्न हो सकता है कि जब वह सदैव से बन्धनों में ही है तब मुक्त होने की आशा कैसे की जाये? उत्तर है कि यह विवेकवान का स्वयं का अनुभव है कि मन का राग ही बन्धन है और उसे छोड़ा जा सकता है। अतएव मुक्ति तो स्वसंवेद्य है, कोई कल्पना नहीं। मन का मोह छोड़ो, बस मुक्त।

968. प्रश्न—मकान का निर्माता जब चाहे मकान में रहे और जब चाहे उससे बाहर चला जाये और पुन: मकान में लौट आये। इस प्रकार जीव शरीर में से स्वतन्त्रतापूर्वक आने-जाने की क्रिया क्यों नहीं कर पाता?

उत्तर—जीव कर्म-वश प्रारब्ध-शरीर से जुड़ा है। शरीर ऐसी रचना है कि रचना के साथ जीव का निवास होता है और निकल जाने के बाद इसमें आना नहीं होता।

969. प्रश्न—कर्मों का लेखा-जोखा कौन रखता है?

उत्तर—मन के अन्दर टिके हुए संस्कारों में ही सारे कर्मों के लेखे-जोखे रहते हैं। उसकी अन्तर्निहित शक्ति से कर्मफल भोग होते हैं।

970. प्रश्न—किस मत से मुक्ति है तथा मुक्ति का क्या प्रमाण है?

उत्तर—अपने आप को ठीक से समझकर सारे बन्धनों से छुड़ा लेने में मुक्ति है। मुक्ति का प्रमाण है मन का सर्वथा अनासक्त हो जाना। यह स्वसंवेद्य है। इसके लिए बाहरी प्रमाण नहीं चलते।

971. प्रश्न—पापी सुखी तथा पुण्यात्मा दुखी देखे जाते हैं, क्यों?

उत्तर—ऐसी बात नहीं कि सब पापी सुखी तथा पुण्यात्मा दुखी देखे जाते हैं। पुण्य का फल सदैव सुख है, किन्तु पुण्यात्मा से भी कुछ आगे-पीछे बुरे कर्म हुए रहते हैं उनके फल में उन्हें दुख मिलेगा ही। इसी प्रकार वर्तमान में

पाप करने वाले से भी पहले जो पुण्यकर्म हुए हैं उनके फल में उसे सुख मिलेगा ही।

972. प्रश्न—माता तथा पत्नी के विवाद में यदि माता को समझावें तो वे नाखुश होती हैं और पत्नी को समझावें तो वह नाखुश होती है। क्या करें?

उत्तर—कितने ही युवक अपनी माता तथा पत्नी के कलह के बीच में पिसते हैं। जब युवक माता को समझता है तब माता युवक को स्त्री-गुलाम होने का आरोप करती है और जब वह पत्नी को समझाता है, तब पत्नी अपने आपको उपेक्षित महसूस करती है। ऐसे संकट की घड़ी में धैर्य से काम लेना चाहिए।

973. प्रश्न—ब्राह्मण कौन है?

उत्तर—जिसने मन, इन्द्रियों एवं वासनाओं पर विजय प्राप्त कर ली हो।

974. प्रश्न—अंहिसा और प्रिय भाषण में श्रेष्ठ कौन है?

उत्तर—दोनों श्रेष्ठ हैं। अहिंसा में सारे सद्‌गुण आ जाते हैं।

975. प्रश्न—क्या मन की इच्छाएं पूरी हो सकती हैं?

उत्तर—इच्छाएं किसी की पूरी नहीं होतीं। विवेक से उनका त्याग करना चाहिए। हां, आवश्यकताएं पूरी होती हैं। उसके लिए श्रम करना चाहिए।

976. प्रश्न—जीव सत्य चैतन्य है, फिर वैराग्य किसके लिए करना चाहिए तथा वैराग्य का पूरा अर्थ क्या है?

उत्तर—वैराग्य का पूरा अर्थ है विषयों की आसक्ति का सर्वथा त्याग करना। वैराग्य इसलिए आवश्यक है जिससे क्षणभंगुर विषयों से मन हटकर सत्य चैतन्य स्वरूप में स्थित हो।

977. प्रश्न—हम कैसे जानें कि हमारा आत्मा पवित्र बन गया?

उत्तर—जब मन में राग-द्वेष एवं दुख न हो, तब समझो आत्मा पवित्र हो गया।

978. प्रश्न—आत्मचिंतन करने के लिए क्या विशेष स्थान एवं वस्तुओं की आवश्यकता है?

उत्तर—एकांत, शुद्ध वातावरण एवं नीरवता सहायक है; किन्तु मुख्य बात है आध्यात्मिक विचारों की प्रौढ़ता।

979. प्रश्न—महात्मा पुरुषों के नाम के पहले 108 तथा 1008 लिखने का क्या तात्पर्य है?

उत्तर—लोग 108 से ब्रह्म अर्थ लगाते हैं। ब्रह्म में ब, र, ह, म चार अक्षर हैं। क से गिनना शुरू करके अलग-अलग इन चारों अक्षरों तक पहुंचने पर सब 108 अक्षर हो जाते हैं। इसीलिए 108 ब्रह्म के अर्थ में लेते हैं। ब्रह्म का अर्थ है श्रेष्ठ। बृहत्वात् ब्रह्म। 108 में एक शून्य और लगाकर 1008 कर देते हैं। यह सब केवल महिमा है। आदर के लिए उनका प्रयोग करते हैं।

* * *

980. प्रश्न—हिन्दू धर्म के ग्रन्थों में 33 कोटि देवता का वर्णन कहां पर है?

उत्तर—बृहदारण्यक उपनिषद् के अनुसार अग्नि, पृथ्वी, वायु, अन्तरिक्ष, सूर्य, देवलोक, चन्द्रमा और नक्षत्रगण—ये आठ वसु हैं। दस इन्द्रियां तथा मन ये ग्यारह रुद्र हैं। बारहों महीने आदित्य हैं। गरजने वाला बादल इन्द्र है। यज्ञ प्रजापति है। ये तैंतीस देवता हैं।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार तैंतीस देवता इस प्रकार हैं—

आठ वसु—धर, ध्रुव, सोम, विष्णु, अग्नि, वायु, प्रत्यूष तथा प्रभास। ग्यारह रुद्र—हर, बहुरूप, अंबक, अपराजित, कपर्दी, रैवत, मृगव्याध, वृषाकपि, शंभु, शर्व और कपाली। बारह आदित्य—धाता, अर्यमा, मित्र, वरुण, इन्द्र, विवस्वान, पूषा, क्रतु, अंशु, भग, त्वष्टा तथा विष्णु। इसके साथ इन्द्र और प्रजापति। इनमें एक-एक देवता के पीछे निन्नानबे लाख, निन्नानबे हजार, नौ सौ निन्नानबे की संख्या अधिक जोड़कर लोगों ने तैंतीस करोड़ देवता की कल्पना कर रखी है। महाभारत आदि पर्व के अध्याय एक के 41वें श्लोक के अनुसार देवता तैंतीस हजार तैंतीस सौ तैंतीस हैं। परन्तु यह सब काल्पनिक है।

981. प्रश्न—हम किसे विश्वसनीय मानें?

उत्तर—जिसे दीर्घकाल के व्यवहार में निष्कपट पावें।

982. प्रश्न—लोग निर्दोष व्यक्ति को भी शंका की दृष्टि से क्यों देखते हैं?

उत्तर—न समझकर। दूसरे को समझने के लिए सहृदयता की बड़ी आवश्यकता है।

983. प्रश्न—मैं गृहस्थ हूं। गृहस्थी में नाना द्वन्द्व आते ही रहते हैं। कैसे शांति प्राप्त करूं?

उत्तर—सब कुछ नाशवान है। यहां किस चीज के लिए हर्ष-शोक किये जायें। ज्ञान-भक्तिपूर्वक हंसी-खुशी से जीवन जीयो। सद्ग्रन्थ खूब पढ़ो, संत-भक्तों के बीच में बैठकर परमार्थ चर्चा सुनो तथा करो। सांसारिक हानि-लाभ को ज्यादा महत्त्व न दो। सब कुछ को नश्वर समझने वाला हर्ष-शोक नहीं करता।

984. प्रश्न—बाल-बच्चे हैं, गुजर की चीजें हैं, परन्तु मन शांत नहीं है, क्या करूं? कहां भाग जाऊं?

उत्तर—साधना सम्पन्न सन्तों के पास कुछ दिन रहा करो, सद्ग्रन्थ खूब पढ़ा करो और प्राप्त ज्ञान का मन में अभ्यास किया करो।

985. प्रश्न—यदि मन नहीं रुकता है तो इसका कारण संकल्प-शक्ति की कमी है या प्रारब्ध?

उत्तर—साधना की असफलता में प्रारब्ध को कभी कारण नहीं मानना चाहिए, किन्तु साधक की अपनी संकल्पशक्ति की कमी, त्याग का अभाव, श्रम की शिथिलता एवं मोह ही कारण हैं।

986. प्रश्न—चरवाहे पशुओं को, शिक्षक छात्रों को तथा माता-पिता बच्चों को दण्ड देते या मारते हैं। तो क्या ये सब हिंसा में गिने जायेंगे?

उत्तर—मारना तो पशु को भी ज्यादा नहीं चाहिए जिससे वे पीड़ित हों, केवल डरा-धमका कर उनसे काम लेना चाहिए। फिर बच्चों एवं परिवार वालों को मारना तो पूरी पशुता है। उन्हें स्नेह से या थोड़ा डराकर उन पर अनुशासन होना चाहिए।

987. प्रश्न—क्या सचमुच जादू-मन्तर से किसी की हत्या कर दी जा सकती है?

उत्तर—बिलकुल नहीं। जादू-मन्तर बिलकुल झूठे हैं। जादूगर कहे जाने वाले लोग हाथ की सफाई, बात की सफाई, दवाई, वस्तु की बनावट आदि से अर्थात जालसाजी से अपने चमत्कार दिखाते हैं जिन्हें समझ लेने वाले को वह सब केवल खिलवाड़ लगता है।

988. प्रश्न—मांसाहारी पति के लिए शाकाहारी पत्नी यदि मांस पकाती है तो क्या ठीक करती है?

उत्तर—गलत करती है। न पति को उससे मांस पकवाना चाहिए और न पत्नी को पकाना चाहिए।

989. प्रश्न—मानस-जप तथा मानस-ध्यान क्या है? इसका उपयोग क्या है?

उत्तर—किसी नाम या मन्त्र का मन में जप करना मानस-जप है। इसमें ओष्ठ से कुछ कहा नहीं जाता है, केवल मन ही मन में जपा जाता है। इसी प्रकार मानस-ध्यान है। मन में किसी महापुरुष का चित्र एवं कोई ज्योति आदि वस्तु का आलम्बन कर उसमें मन को एकाग्र करना मानस-ध्यान है। पहले मन को एकाग्र करने के लिए यह सब साधन ठीक है। जिसको जिस मन्त्र एवं नाम में श्रद्धा हो वह उसका जप कर सकता है तथा जिसको जिस महापुरुष या वस्तु में श्रद्धा हो वह उसको ध्यान का आलम्बन बना सकता है।

990. प्रश्न—ब्रह्मचर्य रखकर या गृहस्थी में रहकर तथा अपने कर्तव्य को सुधारकर काम-क्रोधादि पर विजय करना जरूरी है कि ध्यान-पूजा?

उत्तर—मुख्य बात कामादि विकारों से मुक्त होकर अपने आप में शांत होना ही है। इसी के लिए अधिकार-भेद से प्रथम ध्यान-पूजा भी ठीक है। तत्त्वत: ध्यान तो आखिरी मंजिल है। सारे संकल्पों का त्याग हो जाना ही ध्यान है और यही समाधि है।

991. प्रश्न—क्या गृहस्थ जीवन जीना भी इन्द्रिय-मन की दासता है?

उत्तर—किसी भी व्यक्ति को यह स्वयं ही अनुभव होता है कि मैं इन्द्रिय-मन का दास हूं या स्वामी। स्वयं परखे और देखे। इसका मानदण्ड गृहस्थ-विरक्त वेष नहीं है।

992. प्रश्न—उपासना क्या है?

उत्तर—किसी पवित्रात्मा पुरुष की संगत, उसके सद्‌गुण एवं ज्ञान का प्रभाव लेकर अपने आप का शोधन, फिर निज चेतन स्वरूप में स्थिति—ये सब उपासना के लक्षण हैं।

993. प्रश्न—भावना क्या है, यह कब तक ज्यादा रहती है?

उत्तर—मन की रुचि को भावना कहते हैं। किशोरावस्था एवं तरुणाई में यह ज्यादा रहती है। उम्र बढ़ने के साथ यह घटती जाती है। बुरी भावना का होना गलत है, अच्छी भावना होना ठीक है।

994. प्रश्न—क्या अविवाहित रहने पर स्वर्ग नहीं मिलता?

उत्तर—स्वर्ग है मन की प्रसन्नता और यह होती है मन के निर्मल होने पर। स्वर्ग से विवाह-अविवाह से मतलब नहीं है। जिसका मन निर्मल है, वह स्वर्ग-सुख भोग रहा है।

995. प्रश्न—एक भक्त-डॉक्टर मांसाहारी रोगी की चिकित्सा करते समय उसे मांसाहार करने की सलाह दे या शाकाहर की?

उत्तर—डॉक्टर मजबूर नहीं है कि वह किसी मांसाहारी रोगी को मांसाहार करने की राय दे।

996. प्रश्न—जीव अजर-अमर है। वह सारी वासनाओं को छोड़कर मुक्त हो जाता है तो कहां रहता है?

उत्तर—जीव चेतन है। चेतन जड़ से नहीं बन सकता, अत: चेतन जड़ से अलग है। चेतन द्रष्टा है और जड़ दृश्य है। वासनाएं ही जीव को दुख देती हैं। वासनाओं का त्याग ही मोक्ष है और वह जीवनकाल में ही चरितार्थ होता है। मोक्ष का पूरा काम तो जीवनकाल में ही हो जाता है। अत: शरीर छूटने के बाद की चिन्ता करने की आवश्यकता ही नहीं। जो वस्तु सत्य है, वह मिटती नहीं। जीव भी सत है वह मिट कैसे जायेगा। कुछ लोग कहते हैं जीव ब्रह्म में लीन हो जायेगा; परन्तु जीव से अलग ब्रह्म क्या वस्तु है जो उसमें लीन हो जायेगा। विकारी वस्तु लीन होती है। जैसे विकारी जलबूंदें विकारी समुद्र में लीन होती हैं। जीव निर्विकार है वह किसी में लीन कैसे हो जायेगा। जीव चेतन है और वह मैं ही हूं, यह स्वयं प्रत्यक्ष एवं अपरोक्ष है, किन्तु निजस्वरूप चेतन से भिन्न ब्रह्म की कोई अनुभूति नहीं होती। अत: जीवनकाल में सारी वासनाएं छोड़कर अपने स्वरूप में स्थित होना मोक्ष है। मरने के बाद की चिन्ता बेकार है। कबीर देव ने कहा है—

'जियत न तरेउ मुये का तरिहो, जियतहि जो न तरै।'

(बीजक शब्द, 14)

997. प्रश्न—''पारस रूपी जीव है, लोह रूप संसार। पारस ते पारस भया, परख भया टकसार।'' (बीजक, साखी 57) इसमें जीव की पत्थर से तुलना क्यों की गयी है? जीव तो जाग्रत रूप है।

उत्तर—'पारस रूपी जीव है' का मतलब यह नहीं है कि जीव पत्थर रूप है। पारस का तो केवल उदाहरण है। यहां का अभिप्राय है कि कविकल्पना के अनुसार जैसे पारस से लोहा छू जाने पर वह सोना हो जाता है वैसे चेतन जीव के सम्पर्क में जड़ देह चेतनवत भासने लगती है। शरीर जड़ है, परन्तु जीव के संसर्ग से वह चेतनवत लगता है। दूसरी पंक्ति में है ''पारस ते पारस भया, परख भया टकसार'' उदाहरण में पारस से लोहा छू जाने पर केवल सोना होता है, पारस नहीं होता। किन्तु यहां पारस से पारस हो जाता है। अर्थात सद्गुरु के संसर्ग से जीव गुरुत्व पा जाता है। अर्थात जीव का स्वभाव-सिद्ध गुरुत्व

उद्घाटित हो जाता है। 'परख भया टकसार' परख अर्थात ज्ञान ही टकसार है। प्रमाण सच्चे ज्ञान का ही होता है।

998. प्रश्न—'जिव मति मारो बापुरा' सद्गुरु कहते हैं, परन्तु देह के व्यवहार में कुछ जीव मर जाते हैं। अमनिया कर जीवों को अन्न से निकाल दिया जाता है, वे भी मर जाते हैं, तो जीव-दया पालन कहां हुआ?

उत्तर—शक्ति चले तक किसी जीव को न मारना चाहिए। अब शरीर-निर्वाह की विवशता में कोई भी जीव मर जाता है तो उसमें क्या करोगे? केवल अमनिया ही नहीं, किसान हल चलाता है, वह भी जीव मारने के लिए नहीं, किन्तु अन्न पैदा करने के लिए। यदि जीव मर जाते हैं तो वह क्या करेगा! अत: शक्ति चले तक जीव-हत्या करने से बचो। बस इतना ही चारा है। श्री रामरहस साहेब ने पंचग्रंथी में कहा है—''मानुष भरसक चूकै नाहीं। आखिर होय दोष नहिं ताही।'' (मानुष विचार)

999. प्रश्न—बानी जाल का खण्डन करते हैं, परन्तु ज्ञान की बातें भी तो बानी हैं।

उत्तर—एक कांटा चुभकर दर्द करता है और दूसरे कांटे से उसे निकाल दिया जाता है जो पीड़ा को दूर करने वाला बन जाता है। अत: कल्याणकारी शब्द ग्रहण करने योग्य हैं। सद्गुरु ने कहा है ''शब्द-शब्द बहु अंतरे'' तथा ''जो चाहो निज तत्त्व को, तो शब्दहि लेहु परख।''

1000. प्रश्न—व्यावहारिक जीवन में माया से कैसे अलग रहा जाये?

उत्तर—जैसे जल में कमल रहता है। सब समय जो अपने मन में विचार रखता है उसके मन का मोह मिटता रहता है। प्राणी और पदार्थ माया नहीं हैं, किन्तु मन का मोह माया है, जो प्राणी-पदार्थों में लग जाता है। अपने आप को सब समय पथिक समझो। यहां अपना एक तृण भी नहीं है, फिर किसका मोह किया जाये।

1001. प्रश्न—अचल जीव का गमनागमन कैसे?

उत्तर—जैसे आदमी नाव, जहाज, ट्रेन, वायुयान आदि वाहनों में बैठकर बिना चले चला जाता है, वैसे स्वभाव से निष्क्रिय चेतन वासना-वश गमनागमन करता है।

1002. प्रश्न—मुक्त जीव वासनाहीन होता है, तो वह प्रारब्धांत में देह से कैसे निकलता है?

उत्तर—तुम्हारा काम है वासना त्यागकर शांत होना। प्रारब्ध अपने आप समाप्त होगा। लोग करने योग्य काम—वासना-त्याग तो नहीं करते अपने दिमाग को व्यर्थ की बातों में लगाते हैं। वासना त्यागो, देह छूटने की चिन्ता न करो। वह तो सबकी छूटती ही है।

1003. प्रश्न—मनुष्य-शरीर ज्ञान-खानि कैसे कहा जाये जब वह हिंसा में लिप्त है?

उत्तर—सब मनुष्य हिंसा में नहीं लिप्त हैं। मनुष्य शरीर ज्ञान-खानि तो है ही। उसका कोई दुरुपयोग करता है तो उसकी गलती है। जो उसका सदुपयोग करता है वह अपना कल्याण कर लेता है।

1004. प्रश्न—सन्तोष करने से प्रगति नहीं होती और प्रगति में लगने पर सन्तोष नहीं आता, क्या करूं?

उत्तर—चाहे जितनी प्रगति कर लो, सन्तोष के बिना सुख नहीं मिलेगा। सन्तोष करने का अर्थ निकम्मा बन जाना नहीं है। जन-सेवा के लिए सदैव श्रमशील रहो, परन्तु इन्द्रिय-भोग और सम्मान की इच्छा त्यागकर सदैव सन्तोष में विराजो।

* * *

1005. प्रश्न—क्षर, अक्षर तथा नि:अक्षर क्या है?

उत्तर—क्षर कहते हैं जिसका क्षरण हो, नाश हो और अक्षर कहते हैं जिसका नाश न हो। जड़ प्रकृति से बनी वस्तुएं परिवर्तनशील होने से क्षर हैं और जीव अक्षर है; क्योंकि वह अविनाशी है। कुछ लोगों की कल्पना है कि क्षर-जड़ प्रकृति एवं अक्षर-अविनाशी जीव के ऊपर एक ईश्वर है जिसे नि:अक्षर कहना चाहिए। परन्तु विवेक कर देखा जाये तो लक्षण दो ही हैं एक क्षर तथा दूसरा अक्षर। कोई सत्ता या तो परिवर्तनशील होगी या अपरिवर्तनशील। इसलिए क्षर तथा अक्षर ही उपयुक्त लगते हैं। नि:अक्षर एक कल्पना है।

1006. प्रश्न—श्री निर्मल साहेब ने 30वें भजन में कहा है ''हंसा चलो अपने देश—माया ब्रह्म जीव ईश्वर की जहां नहीं प्रवेश।'' तो वह कौन-सा देश है जिसे यहां बताया गया है?

उत्तर—इसी भजन की अन्तिम पंक्ति में इसे बता दिया गया है ''निर्मलदास चित्तवृत्ति निरोधक आप रहेगा शेष।'' चित्त की वृत्तियों का पूर्ण निरोध करने

वाला चेतन स्वयं शेष रह जायेगा। हंस चेतन है। वह मन के व्यापार में भटकता है। जहां तक मन का पसारा है वह परदेश है। इस भजन में श्री निर्मल साहेब ने कहा है कि हे हंस, हे चेतन! मन का देश छोड़कर अपने स्वरूप में स्थित होओ। वहीं क्लेशों का अन्त है। दार्शनिक लोग माया, ब्रह्म, जीव तथा ईश्वर की नाना परिभाषाएं करते हैं। माया तो जड़ है ही, ईश्वर और ब्रह्म की भी आत्मस्वरूप से अलग कल्पना करते हैं जो एक मन की ही अवधारणा होती है। जीव की अंश, प्रतिबिम्ब एवं नाना परिभाषाएं करते हैं। श्री निर्मल साहेब कहते हैं कि ये सारी परिभाषाएं मन की कल्पनाएं हैं। जब सारे संकल्प त्याग दिये जाते हैं तब चेतन की स्वसत्ता ही शेष रह जाती है वही अपना देश है, अपनी स्थिति है, अपना स्वरूप है। वहां अन्य किसी परिभाषा की आवश्यकता नहीं, प्रवेश नहीं।

1007. प्रश्न—मूल नक्षत्र में पैदा हुए बच्चे क्या अशुभ हैं?

उत्तर—कदापि नहीं, इस अशुभ मान्यता के आधार में पुरोहित वर्ग पुजाते-खाते हैं। नवजात शिशु, जिसने अभी कोई कर्म नहीं किया है उसे अशुभ बताना अपराध है। इस भटकाव में कभी नहीं पड़ना चाहिए।

1008. प्रश्न—रामायण रहस्य में लिखा है कि रामायण ईसा के तीन सौ वर्ष पूर्व से बनना शुरू हुई, यह भी लिखा है कि राम वन में वाल्मीकि-आश्रम में गये थे, और यह भी लिखा है कि राम बुद्ध से एक हजार वर्ष पहले हुए होंगे, यह परस्पर विरुद्ध वचन क्यों?

उत्तर—रामायण रहस्य के प्रथम अध्याय के पांचवें संदर्भ में बताया गया है कि आदि कवि वाल्मीकि के अलावा भी तीन वाल्मीकि हुए हैं जैसे तैत्तिरीय प्रातिशाख्य में वर्णित वैयाकरण वाल्मीकि, महाभारत उद्योगपर्व में वर्णित सुपर्ण वाल्मीकि तथा सभापर्व में वर्णित महर्षि वाल्मीकि। हो सकता है कि श्रीराम के समय में कोई वाल्मीकि रहे हों, जिनके आश्रम में राम गये हों। किन्तु रामायण के आरम्भिक लेखक वाल्मीकि कोई भिन्न रहे हों जो राम के बाद हुए हैं।

रामायण के दूसरे अध्याय के दूसरे संदर्भ में यह बताया गया है कि वाल्मीकि ने एक महाकाव्य लिखने के लिए नारद से उसका नायक पूछा। नारद ने श्रीराम को बताया और उनका पूरा वननिर्वासन से लेकर लंका से लौटकर राजगद्दी तक का विवरण दिया। यह सब बालकांड के प्रथम सर्ग में है। जब पीछे बालकांड तथा उत्तरकांड की सामग्री लिखी गयी तब बालकांड के तीसरे सर्ग में रामजन्म, विवाह तथा सीतानिर्वासन आदि की बातें नारद ने वाल्मीकि को बतायी। मतलब यह है कि नारद के बताने के पूर्व वाल्मीकि श्रीराम के

विषय में कुछ नहीं जानते थे। इसलिए श्रीराम के काल में वाल्मीकि रहे होंगे तो कोई अन्य वाल्मीकि रहे होंगे। एक तरफ तो बालकांड के शुरू में ही लिखा है कि नारद के बताने पर वाल्मीकि ने राम को जाना और दूसरी तरफ रामायण के बालकांड तथा उत्तरकांड में रामायण लेखक वाल्मीकि राम के साथ जुड़े हैं। वस्तुत: रामायण अनेक परस्पर विरोधी बातों को समेटकर चलती है। लगता है कि रामायण लेखकों ने किसी प्रसिद्ध वाल्मीकि का नाम रामायण-रचयिता के रूप में जोड़कर उसकी गुरुता बनाने की चेष्टा की है।

1009. प्रश्न—आप द्वारा हुआ गीता का विवेचन बड़ा अच्छा लगा। परन्तु यदि श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अध्यात्म तथा राग-द्वेष से रहित होने के लिए साधना का उपदेश दिया था तो महाभारत युद्ध क्यों हुआ?

उत्तर—गीता जिसने भी लिखी है उसने आध्यात्मिक उपदेश ही दिया है, परन्तु उसे महाभारत में रखने के कारण उसमें युद्ध का पुट दिया गया है, अन्यथा अप्रासंगिक होता। गीता लिखने के बाद युद्ध हुआ है ऐसी बात नहीं है। युद्ध तो हो चुका होगा। गीता पीछे लिखी गयी।

1010. प्रश्न—राजा जनक ने सीता के स्वयंवर में अन्य राजाओं को बुलाया था, परन्तु अयोध्यानरेश को क्यों नहीं बुलाया था?

उत्तर—वाल्मीकीय रामायण (1/66) के अनुसार जनक ने यह प्रण कर रखा था कि जो व्यक्ति शिव-धनुष को चढ़ा देगा उसे ही सीता दी जायेगी। सीता के बड़ी हो जाने पर कई राजाओं ने उन्हें मांगा। जनक ने अपना प्रण बताया। राजा लोग उस धनुष को नहीं चढ़ा सके, इसलिए उन्हें सीता नहीं मिलीं। श्रीराम ने चढ़ा दिया, उन्हें मिल गयीं। जनक ने न अन्य राजाओं को बुलाया था और न श्रीराम को बुलाया था। उनकी तो केवल घोषणा थी कि सीता 'वीर्यशुल्का' है, अर्थात पराक्रम प्रकट करने वाले को मिलने वाली है। वाल्मीकीय रामायण में जनक ने किसी को भी धनुष चढ़ाने के लिए निमन्त्रित नहीं किया है, किन्तु केवल घोषणा की है। वाल्मीकीय रामायण के अनुसार जब श्रीराम जनकपुर में धनुष के पास बाण चढ़ाने पहुंचते हैं तब वहां कोई अन्य राजा नहीं था। केवल जनक तथा उनके कार्यकर्ता थे। अत: जनक ने जब अन्य किसी राजा को निमंत्रित नहीं किया तो दशरथ को क्यों निमन्त्रित करते!

1011. प्रश्न—जहर से जहर दूर होने के समान क्या द्वेष से द्वेष नहीं दूर होता?

उत्तर—जहर से जहर भले दूर हो जाये, परन्तु द्वेष से द्वेष नहीं दूर होता है। द्वेष तो प्रेम से ही दूर होता है।

1012. प्रश्न—दान करने या चोरी करने का मन है, परन्तु इसी बीच शरीर छूट गया और उसने इच्छानुसार कर्म नहीं कर पाया तो क्या उसे उसके फल मिलेंगे?

उत्तर—उसके मन में शुभ या अशुभ के संस्कार हैं। वे संस्कार उसकी अच्छी-बुरी दशा होने में कारण बनेंगे। यदि वह उनके अनुसार कर्म कर लेता तो वे ज्यादा बलवान हो जाते। इच्छा-मात्र से हलके फल होते हैं, कर्म से गहरे।

1013. प्रश्न—मन अशांत रहता है, शांति कैसे मिले?

उत्तर—मनुष्य का मन क्षणभंगुर पदार्थों में राग करता है। इसलिए उनके बिछुड़ने एवं नाश होने के भय से पीड़ित रहता है तथा मन और इन्द्रियों के पांचों विषयों में भोग की आदत बनाकर अशांत रहता है। अतएव संसार का राग त्याग देने पर ही शांति मिल सकती है।

1014. प्रश्न—राजयोग किसे कहते हैं?

उत्तर—कपाली, कुंजली आदि हठयोग की क्रिया से हटकर केवल विचारों द्वारा मन को स्ववश करना तथा अन्ततः विचारों-संकल्पों को छोड़कर शांत हो जाना।

1015. प्रश्न—क्या ज्योतिष द्वारा भविष्य की बातें बतायी जा सकती हैं?

उत्तर—गणित ज्योतिष ठीक है, किन्तु फलित ज्योतिष बकवास है। बारह राशियों में संसार के सारे मनुष्यों के भविष्य बताये जाते हैं जो एक अटकलबाजी है। किसी-किसी बात का तुक बैठ जाता है, उसी में लोग तीरंदाज बन जाते हैं। समझदारी यह है कि अपने भविष्य की बात जानने की कभी चेष्टा ही न करे, अन्यथा मिथ्या आशा में लटका हुआ धन तथा समय बरबाद किया जायेगा।

1016. प्रश्न—सांसारिक वस्तुओं की अत्यधिक चाह और उनसे मोह हो और हम अपना समय भजन, पूजन तथा पाठ में भी लगायें तो क्या हमें मोक्ष मिल सकता है?

उत्तर—भजन, पूजन, पाठ करना तो ठीक है, परन्तु सांसारिक वस्तुओं में अत्यधिक क्या, कुछ भी राग तथा इच्छा करने में मोक्ष नहीं मिल सकता। मोक्ष है मन की पूर्ण शांति और यह राग तथा इच्छा के कटने पर ही होता है।

1017. प्रश्न—"मोहि कहत भयल युग चार।" बीजक में चार बार आया है। कबीर साहेब के इस कथन का क्या तात्पर्य है?

उत्तर—मेरे विचार से यहां 'मोहि' का अर्थ केवल कबीर साहेब के व्यक्तित्व में नहीं है किन्तु गुरु-परम्परा में है। कबीर साहेब कहते हैं कि मेरे जैसे लोग चारों युगों से अर्थात सब समय से सत्यासत्य का निर्णय कर रहे हैं।

1018. प्रश्न—बीजक में 52 बार वेद शब्द का प्रयोग हुआ है। बीजक में वेद शब्द खण्डनपरक है या मंडनपरक?

उत्तर—दोनों प्रकार है। जहां पर वेदों की दोहाई देकर गलत बात मनवाने की बात है वहां कबीर साहेब वेदों का खंडन कर देते हैं। वैसे कबीर साहेब वेदों का आदर करते हैं। आदर के सन्दर्भ में वचन हैं—''है कोई गुरु ज्ञानी जगत उलटि वेद बूझै।'' ''जाके मुनिवर तप करे, वेद थके गुण गाय। सोई देउँ सिखापना, कोई नहीं पतियाय।'' ''अन्ध सो दर्पण वेद पुराना, दर्बी कहा महारस जाना।'' इत्यादि।

1019. प्रश्न—कथा, व्यथा, प्रवचन, महात्मा तथा परमात्मा क्या है?

उत्तर—किसी घटित घटना या काल्पनिक कहानी को कथा कहते हैं। पीड़ा, ज्यादातर मानसिक पीड़ा को व्यथा कहते हैं। भाषण देने को प्रवचन तथा सद्गुणसम्पन्न को महात्मा कहते हैं और पूर्ण कृतार्थ, जीवन्मुक्त आत्मा को परमात्मा कहते हैं।

1020. प्रश्न—वृक्ष-वनस्पति जड़ हैं। उनमें न ज्ञान है और न विवेक। परन्तु उनके गुण अटल कैसे रहते हैं। गुलाब में चमेली की गंध नहीं हो सकती और बेला में केवड़ा की?

उत्तर—जिसमें ज्ञान होता है वह देहधारी जीव ही अपने गुण बदल सकता है, जैसे राग से वैराग्य या हिंसा से दया आदि; परन्तु जो वृक्ष-वनस्पति आदि जड़ हैं वे अपने गुण नहीं बदल सकते। उनके गुण स्वाभाविक हैं।

1021. प्रश्न—जब सबके आत्मा समान हैं, तब सबकी बुद्धि में अन्तर क्यों?

उत्तर—सबकी बुद्धि पर उनके अनेक जन्मों के भिन्न-भिन्न संस्कार पड़े हैं, भिन्न-भिन्न वातावरण, देश, भाषा, मान्यता, परम्परा की उन पर छाप हैं, इसलिए एक समान आत्मा होने पर भी बुद्धि में अन्तर है।

1022. प्रश्न—मेरे दो लड़कियां हैं, मजदूरी करके खाता हूं। परिवार बढ़ाना नहीं चाहता। परन्तु सोचता हूं कि लड़कियां तो अपने-अपने घर चली जायेंगी। एक लड़का हो जाता तो बुढ़ापा में सेवा करता। मैं दुविधा में हूं। क्या करूं?

उत्तर—आगे पुन: लड़का ही होगा यह निश्चय नहीं है। लड़का होकर उससे तुम्हें सेवा मिलेगी यह भी निश्चय नहीं है। दूसरे का पुत्र गोद लेना दुख खरीदना है। अत: मेरी राय है कि लड़कियों का समयानुसार विवाह कर उन्हें उनके घर भेज दो और स्वयं दोनों प्राणी स्वतन्त्र होकर भक्ति, साधना तथा संयम से सुखद जीवन बिताओ। बुढ़ापा में तुम लोगों की सेवा हो जायेगी, उसके लिए मानव का विराट स्वरूप सहयोगी बनेगा। सम्भावित असुरक्षा की कल्पना से अपने आपको दुखी मत बनाओ। विश्वास करो कि यदि विवेक से जीवन बिताओगे तो अन्त भी सुखद होगा।

1023. प्रश्न—''भोग में योग जगावै'' का अर्थ क्या है?

उत्तर—मनुष्य के मन में भोग की वासना है। साधक को चाहिए कि उस मन में योग जाग्रत करे। इस पंक्ति का अर्थ कोई यह न लगावे कि काम-भोग करते-करते योग भी सध जायेगा। यह ठीक है कि भोगी आदमी भी यथाशक्ति योग-साधना करे, परन्तु पूर्ण योग तो तभी सधेगा जब भोगों का पूर्ण त्याग हो।

* * *

1024. प्रश्न—आध्यात्मिक ज्ञान क्या है?

उत्तर—आत्मा सम्बन्धी ज्ञान आध्यात्मिक ज्ञान है। यह शरीर भौतिक है। यह बाहरी खोल है। मनुष्य का सार स्वरूप चेतन है जो भीतर है। भीतर की शांति से ही जीवन में सच्चा सुख हो सकता है।

1025. प्रश्न—मुमुक्षु साधक या जीवन्मुक्ति रहनी में विचरने वाले साधक के लिए भोजन में शाकाहार या मांसाहार लेने में क्या हानि-लाभ है?

उत्तर—मांसाहार बर्बर, पाशविक, घृणित तथा तामसी भोजन है, सच्चा भोजन तो सुपाच्य तथा सात्विक ही है। जो मांस दूसरे की हत्या करके प्राप्त होता है तथा घृणित और गरिष्ठ है वह साधक का भोजन कैसे हो सकता है?

1026. प्रश्न—''बहुरि कहहु करुणायतन, कीन्ह जो अचरज राम। प्रजा सहित रघुवंश मणि, किमि गवने निज धाम।'' तुलसीकृत रामायण में यह पार्वती का प्रश्न है। इसका उत्तर भगवान शंकर ने क्यों नहीं दिया?

उत्तर—प्राचीनतम रामायण वाल्मीकीय है। उसमें शिव-पार्वती-संवाद, भरद्वाज-याज्ञवल्क्य-संवाद तथा काकभुशुण्डि-गरुड़-संवाद का कहीं चिह्न नहीं है। यह तो गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने मन की बातें कहलवाने के लिए ये सारे संवाद जोड़ रखे हैं। गोस्वामी जी का जो मन था वही-वही बात इन

संवादों में कहलवाया गया है। श्रीराम का शरीरांत किस प्रकार हुआ इसका उत्तर देना गोस्वामी जी को पसन्द नहीं रहा इसलिए उन्होंने शंकर से इसका उत्तर नहीं दिलवाया।

वस्तुत: वाल्मीकीय रामायण में लिखा है कि श्रीराम अपने भाइयों तथा अयोध्यावासियों के सहित सरयू नदी में डूबकर अपने शरीर का अन्त किये।

1027. प्रश्न—सत्संगी होने पर भी मरते समय लोग परिवार के प्रति मोह में ज्यादा क्यों फंस जाते हैं?

उत्तर—सत्संग का पूरा प्रभाव जब ग्रहण किया जायेगा तब मोह मिट जायेगा। मोह इसलिए होता है कि सत्संग का पूरा प्रभाव नहीं ग्रहण किया गया है।

1028. प्रश्न—वर-वधू की शादी में जीवन में एक दूसरे को न छोड़ने की प्रतिज्ञा होती है। इस अवस्था में जो लोग पत्नी को छोड़कर विरक्त हो जाते हैं क्या उनको पाप नहीं पड़ता है?

उत्तर—जो सच्चे अर्थ में विरक्त होता है वह तो स्वयं कीचड़ से निकलता है और उस पत्नी कही जाने वाली नारी को भी पवित्र-पथ पर चलने के लिए अवसर देता है यदि वह समझ सके तो। फिर उसे पाप क्यों पड़ेगा! वह पुण्यात्मा है तथा अपने उत्तम आदर्श से दूसरों को भी पुण्यपथ बताता है।

1029. प्रश्न—आप कहते हैं कि बिच्छू को भी मत मारो, परन्तु वह यदि घर में घुस रहा हो तो?

उत्तर—बिच्छू कोई सिंह नहीं है कि वह घर में घुसकर सब को मार डालेगा। तुम्हारे घर में पहले से ही अनेक बिच्छू होंगे।

1030. प्रश्न—चरणामृत, महाप्रसाद, सेवा और बन्दगी क्या है?

उत्तर—चरण के अंगूठे से छुआ हुआ जल चरणामृत कहलाता है, परन्तु यह गुरु के चरण से छुआ हो या किसी सन्त के। वैसे जिसने विनय धारण कर लिया, उसने मानो चरणोदक ले लिया। गुरु या संतपुरुष का जूठन महाप्रसाद कहा जाता है। जहां ज्यादा प्रेम होता है वहां लोग एक-दूसरे का जूठन खाते हैं जैसे पति-पत्नी एवं मित्र-मित्र। जिसे गुरु और संत में विशेष प्रेम है वे उनके जूठन खा लेते हैं। वस्तुत: उनका उपदेश ही महाप्रसाद है, जूठन खाने की जरूरत नहीं।

सेवा तन, मन, धन आदि से की जाती है। बंदगी वंदना है जो एक शिष्टाचार है। वैसे सेवा को भी बंदगी कहते हैं।

1031. प्रश्न—नाम की बड़ी महिमा है। आदि नाम क्या है?

उत्तर—नाम से बड़ा नामी की महिमा है जिसने सारे नामों की कल्पना की है। सभी नामों का आदि जीव है जो सबका स्थापक है। अत: अपने चेतन स्वरूप को पहचानो।

1032. प्रश्न—क्या तत्त्वज्ञान से सारी वस्तुओं का ज्ञान हो जाता है?

उत्तर—एक काल में केवल एक वस्तु का ज्ञान होता है। जब जिस वस्तु का तात्त्विक ज्ञान हो जाता है तब उसका रहस्य खुल जाता है। इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि तात्त्विक ज्ञान कोई जादू है और उसके हो जाने पर गुप्त-प्रकट सब कुछ जाना जा सकता है।

1033. प्रश्न—क्या भगवान या देवी-देवता बलि या कुर्बानी के नाम पर जीववध कराना चाहते हैं?

उत्तर—पहली बात तो यह है कि मानव के ऊपर न कोई भगवान है और न देवी-देवता। दुर्जनतोष न्याय उन्हें मान भी लिया जाये तो वे जीववध क्यों चाहेंगे! यह मानव की हिंस्र-पशु की प्रवृत्ति है।

1034. प्रश्न—प्रकाश कोठारी नाम के एक लेखक ने लिखा है कि ब्रह्मचर्य नहीं रखना चाहिए। ब्रह्मचर्य समर्थक सारी पुस्तकें जला देना चाहिए। वीर्य खर्च के लिए बना है जमा रखने के लिए नहीं। उक्त लेखक के फैलाये भ्रम का निराकरण क्या है?

उत्तर—उक्त लेखक के समान अनेक लोग ऐसे हुए हैं जो जगत को उलटा पाठ पढ़ाये हैं और पढ़ाते हैं। मनुष्य तो वैसे ही विषयकीट बने हैं। महारथी लोग उन्हें और उसी ओर ठेल रहे हैं। परन्तु यह तो सहज समझा जा सकता है कि शरीर के लिए बलप्रद वीर्य को खोकर मनुष्य केवल अपने शरीर तथा मन को खोखला बनाता है। जो जितना वीर्य ध्वंस करेगा, वह उतना शरीर से निर्बल तथा मन से चंचल बनकर दुख भोगेगा। भोगी लोग स्वयं इसका अनुभव करके उन्हें जो उचित लगे वह करें।

ब्रह्मचर्य में बल है, नीरोग्यता है तथा मन की शांति है।

1035. प्रश्न—एक समाचार पत्र में छपा था कि वनस्पति सजीव है और वह पानी के लिए तरसती है। क्या सच है?

उत्तर—पानी न पाकर वह सूख तो जाती ही है, परन्तु वह उससे दुखी होती है यह मनुष्य की कल्पना है।

वनस्पति में जीव है या नहीं है, इसकी असिद्धि या सिद्धि पारख सिद्धांत का मुख्य विषय नहीं है। उसका मुख्य विषय तो है मनुष्य का प्राप्तव्य उसका अपना चेतन स्वरूप एवं निजात्मा ही है। वैसे वनस्पति निर्जीव हैं। इसे विस्तार से समझने के लिए भवयान सटीक का सातवां प्रकरण मननपूर्वक पढ़ें।

1036. प्रश्न—यज्ञ क्या है, क्या यज्ञ ही उन्नति का साधन है, क्या यज्ञ से वृष्टि होती है, क्या यज्ञ न करने से पतन है?

उत्तर—कल्पित देवताओं के नाम लेकर औषधि, अन्न, घी, मेवे आदि आग में डालना तथा पशु-पक्षियों को भी काटकर उन्हें आग में डालना यज्ञ कहलाता है। आज-कल पशु-पक्षी आदि प्राणी यज्ञ के नाम पर नहीं काटे जाते[1] परन्तु औषधि, घी, मेवे, अन्न आज भी आग में डाले जाते हैं।

इस क्रिया से उन्नति मानना, इसे वर्षा का कारण मानना, इससे मोक्ष मानना—सब अन्धविश्वास है जो पुराकाल से चला आया है और यह पुरोहितों का केवल पेटधन्धा बन गया है।

पीछे के विचारकों ने लोकमंगलकारी कामों को यज्ञ नाम दिया, जैसे ज्ञान की चर्चा यज्ञ है; धर्मशाला, वाचनालय, पुस्तकालय, औषधालय, सत्संगाश्रम, अन्न-वस्त्र-यंत्रादि का उत्पादन आदि यज्ञ है।

आग जलाने से वातावरण विषाक्त होता है। अत: व्यर्थ आग न जलावें। वातावरण शुद्ध रखने के लिए वनस्पतियों का विस्तार करना चाहिए।

1037. प्रश्न—क्या अंगों के फड़कने से शुभ तथा अशुभ होते हैं?

उत्तर—अंग वायुविकार से फड़कते हैं। इससे शुभ तथा अशुभ कुछ नहीं होते। जो लोग इससे शुभाशुभ मानते हैं, उन्हें उनके आधार मिल जाते हैं। मनुष्य के जीवन में कुछ-न-कुछ अच्छी तथा बुरी घटनाएं घटती रहती हैं और वे उन्हें उनसे जोड़ते रहते हैं।

1038. प्रश्न—क्या अविवाहित लड़कियां संन्यास ले सकती हैं? यदि ले सकती हैं तो कब और कहां तथा किस प्रकार? यदि नहीं ले सकती हैं, तो क्यों?

उत्तर—पुरुष संन्यास के अधिकारी हैं तो नारियां भी अधिकारिणी हैं। जैसे कुछ पुरुष स्त्रियों की मलिन संगत से हटकर ब्रह्मचर्य एवं स्वतन्त्र जीवन जीना

---

1. **यह हिन्दू समाज के उदार विचारों की विशेषता है जो धर्मशास्त्र में वर्णित यज्ञ के नाम पर पशुवध शताब्दियों से बन्द है। इस सभ्ययुग में भी मुसलमानों द्वारा ईश्वर के नाम से लाखों पशुओं का वध होता है।**

चाहते हैं, वैसे कुछ नारियां भी पुरुषों की मलिन संगत से हटकर ब्रह्मचर्य एवं स्वतन्त्र जीवन जीना चाहती हैं।

भारत में पारख सिद्धान्त में अभी नारी-साधुनियों का कोई स्वतन्त्र मठ नहीं स्थापित हुआ।[1] जो नारियां विरक्त भाव से रहना चाहती हैं वे अपने माता-पिता के घरों में ब्रह्मचर्यव्रत लेकर रहती हैं और साधनामय जीवन व्यतीत करती हैं। जो लड़कियां ब्रह्मचर्यव्रत से रहना चाहें वे अपने माता-पिता के घर में रहकर साधना से रह सकती हैं। कठिनाइयां हर काम में आती हैं। उन्हें झेलकर ही अपने व्रत में दृढ़ रहने वाला अपने उद्देश्य में सफल होता है।

जहां पुरुष-साधु समाज है ऐसे मठ या समाज में नारी-साधुनियों का रहना उचित नहीं है। इसके लिए नारी-साधुनियों का मठ स्थापित होना चाहिए। ऐसी कोई शूर-वीर तथा सब योग्यताओं से सम्पन्न नारी-साधुनी ही कर सकती है। नारी-साधुनी पुरुष मात्र से तथा पुरुष-साधु नारी मात्र से सर्वथा अलग रहकर अपनी-अपनी वैराग्य-साधना में रह सकते हैं।

1039. प्रश्न—मैं तीन बच्चों का पिता हूं, साथ में पत्नी है। अब मुझे ज्ञान हुआ। अब मैं विरक्ति चाहता हूं। क्या करूं?

उत्तर—पत्नी और बच्चों की रक्षा करो। उनके प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करो तथा मन में वैराग्य रखो। घर में रहकर जल में कमल-जैसा निर्लिप्त व्यवहार करो।

1040. प्रश्न—पुत्र सन्मार्ग पर चलता है तो माता-पिता नफरत करते हैं। क्या माता-पिता की सब बातें माननी चाहिए?

उत्तर—यदि पुत्र सन्मार्ग पर चलता है और माता-पिता नफरत करते हैं तो यह उन्हीं की गलती है। परन्तु इसमें यह भी देखना है कि पुत्र सन्मार्ग पर तो चलता है, किन्तु घर के काम-काज पर ध्यान नहीं देता, तो माता-पिता को कष्ट होगा और उसको लेकर पुत्र के प्रति असन्तोष होगा ही। अतएव पुत्र को चाहिए कि माता-पिता को वह सन्तोष दे। यदि माता-पिता कम समझदार हैं तो भी उनकी सेवा करना तथा उनकी उचित मनसा का पालन करना आवश्यक है।

माता-पिता की गलत आज्ञा मानने की राय तो कोई समझदार न देगा, क्योंकि इससे न पुत्र का कल्याण है और न माता-पिता का; किन्तु पुत्र का

---

1. **ब्रह्मचारिणियों के स्वतंत्र मठ ग्राम पोटियाडीह जिला धमतरी, छत्तीसगढ़ तथा धर्मपुरी, जिला बड़ोदरा (गुजरात) में स्थापित हो गये हैं। वहां कोई ब्रह्मचारिणी रह सकती है। ऐसे अन्य मठ भी स्थापन की दिशा में अग्रसर हैं।**

कर्तव्य है कि जितनी उसकी अपनी शक्ति चले माता-पिता को सन्तोष दे।

1041. प्रश्न—एक दिन अपना माना हुआ सब कुछ नष्ट होगा, फिर भी इसका अहंकार क्यों नहीं जाता?

उत्तर—कुछ भी साथ नहीं जायेगा तथा अन्त में सब कुछ नष्ट हो जायेगा, यह भाव केवल कुछ समय के लिए बुद्धि में आता है, इस भाव की धारणा सदैव एकरस बनी नहीं रहती। जब मन में सदैव विवेक जाग्रत रहता है तब अहंकार समाप्त हो जाता है। इसके लिए सत्संग, सेवा तथा निरन्तर साधना एवं विवेक में मन देना चाहिए।

1042. प्रश्न—शोक, मोह, भय, हर्ष, दिन-रात, देश, काल आदि कहां पर नहीं हैं? वह कौन-सी दशा है जहां पर पहुंचते ही जीव सारे संशयों से मुक्त हो जाता है?

उत्तर—वह समाधि है। समाधि में न दिन है, न रात, न देश है, न काल, न हर्ष-शोक, मद-भय आदि हैं। वहां शुद्ध चेतन स्वसत्ता मात्र है।

1043. प्रश्न—मैं सबको बड़ा मानता हूं तो किसके-किसके पैर छुऊं?

उत्तर—माता, पिता तथा गुरु के अवश्य छूओ, इसके बाद जिनका छू पाओ छूओ, अन्यथा हाथ जोड़कर नमस्कार कर लो। सबसे अच्छा है हाथ जोड़ लेना।

1044. प्रश्न—यदि कोई मनुष्य मरकर पुनः मनुष्य होना चाहे तो क्या करे?

उत्तर—जो आज ही मनुष्य है, उसे मरकर पुनः मनुष्य बनने की आशा करने की बात निरर्थक है। उसे चाहिए कि वह आज पूर्ण मनुष्यता धारण करे। हमें अपनी पूरी शक्ति वर्तमान में अपने उद्धार में लगाना चाहिए, न कि मरने के बाद के विषय में सोच-सोचकर दिमाग खपाना चाहिए। जो वर्तमान में ठीक है, वह भविष्य में सदैव ठीक रहेगा।

1045. प्रश्न—आपके रचित ग्रंथ, प्रवचन, पत्रिका आदि पढ़ने-सुनने में ऐसा लगता है कि मेरे भीतर-बाहर आप ही प्रदर्शित हो रहे हैं। असंग रहना, मौन रहना, ध्यान मग्न रहना भाता है। जीवन बहुत तेजी से बदल रहा है। मैं पागल तो नहीं हो जाऊंगा?

उत्तर—ऐसे भाव वाला आदमी पागल नहीं, सावधान होता है। मेरी वाणियों से आपको जो लाभ लेना हो वह लें। मेरी वाणियां मेरी नहीं, किन्तु गुरु की ही हैं। मैं तो निमित्त मात्र हूं।

1046. प्रश्न—रामायण के वाली वानर जाति के थे और तारा एक राजकुमारी, फिर उनकी शादी कैसे हुई?

उत्तर—वाली और तारा दोनों मनुष्य थे। वे वानर इसलिए कहलाते थे कि उनका गणचिह्न (टॉटैम) वानर था। इसी प्रकार जामवन्त का भालू गण-चिह्न था। इन सब बातों को समझने के लिए तथा रामायण का पूर्ण रहस्य समझने के लिए मेरी लिखी पुस्तक 'रामायण रहस्य' पढ़िये।

* * *

1047. प्रश्न—रक्षाबन्धन में बहनें अपने भाई के हाथ की कलाई में राखी बांधकर पवित्र स्नेह एवं उसकी रक्षा की कामना करती हैं, किन्तु पण्डितों द्वारा राखी बांधना क्या सही है?

उत्तर—वस्तुत: रक्षाबंधन का प्रचलन पंडितों द्वारा ही हुआ है। श्रावण पूर्णिमा को एक वर्गाकार वेदी पर राजा अपने मन्त्रियों के साथ बैठता था। वहां वेश्याओं का नृत्य-गान होता था और पुरोहित पंडित पूजा के साथ राजा के हाथ की कलाई में रक्षासूत्र बांधता था और मन्त्र पढ़ता था—''आपको वह रक्षा बांधता हूं जिससे दानवों के राजा बलि बांधे गये थे, हे रक्षा, तुम (यहां से) न हटो, न हटो।'' मूल श्लोक इस प्रकार है—''येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबल:। तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।'' (भविष्योत्तर पुराण 137/20, एवं धर्मशास्त्र का इतिहास 4/53)।

यह रक्षाबंधन सभी वर्णों के लोगों को पुरोहित बांधते थे, ऐसा विधान था। पीछे वीर-क्षत्रियों को युद्ध में जाते समय शायद बहनें उनकी कलाइयों में बांधने लगीं और रक्षाबंधन के दिन सभी बहनें अपने भाइयों को बांधने लगीं। इस प्रकार यह रक्षाबंधन पंडितों ने बहनों से छीन लिया ऐसी बात नहीं है, किन्तु पंडितों के बाद बहनों में यह प्रचलन हुआ।

1048. प्रश्न—विदेह मुक्तात्मा को उनके भक्त स्तुति-वंदना करके पुकारते हैं, तो क्या वे सुनकर कुछ कृपा करते हैं?

उत्तर—जिसके पास देह ही नहीं है वह किसी की बात सुन कैसे सकता है! विदेह मुक्तात्मा से संसार के लोगों से कोई सम्बन्ध नहीं होता।

1049. प्रश्न—गुरु कबीर के दर्शन होंगे कि नहीं?

उत्तर—गुरु कबीर की देह जड़ तत्त्वों में विलीन हुए चार सौ से अधिक वर्ष हो गये। उनके दर्शन किसी को नहीं होंगे। हां, उनकी वाणी तथा उनके

उच्चादर्शों से प्रेरणा लेकर व्यक्ति आत्म-दर्शन अर्थात स्वरूपज्ञान पा सकता है तथा अपने आत्माराम में सदा के लिए विश्राम कर सकता है। यही जीवन का लक्ष्य भी है।

1050. प्रश्न—क्या बिना जीव-हिंसा किये जीवन बिताया जा सकता है?

उत्तर—अपनी शक्ति चले तक जीव-हिंसा बचाना चाहिए। जो शक्ति के बाहर है, वहां विवशता है। तुम जीव-हिंसा की मंशा छोड़ सकते हो और जहां तक अपना ज्ञान एवं शक्ति चले, वहां तक हिंसा की क्रिया भी छोड़ सकते हो।

1051. प्रश्न—कबीर साहेब ने कहा है—''बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न पाया कोय। जो दिल ढूंढ़ा आपना, मुझ सा बुरा न कोय।'' आपसी बहस में कुछ लोग कहते हैं कि देखो, कबीर साहेब ने स्वयं को कह दिया है कि मेरे समान कोई बुरा नहीं है, तो मैं चुप हो जाता हूं।

उत्तर—यह तो महान पुरुषों की विनम्रता है। गोस्वामी तुलसीदास ने विनयपत्रिका में कहा है ''मैं अपराध भवन, कुसेवक, शठ, अति लालची, काम-किंकर'' (पद संख्या 110, 230, 232) तथा ऐसे शब्द उन्होंने अनेक बार अपने ग्रंथों में अपने लिए कहा है। उन्होंने अपनी दोहावली में कहा है—''रामायण अनुहरत सिख, जग भयो भारत रीति। तुलसी सठ की को सुने, कलि कुचाल पर प्रीति।'' अर्थात रामायण के अनुसार सुन्दर भाईचारे के व्यवहार की सीख दी जाती है, परन्तु संसार के लोग महाभारत के अनुसार भाई-भाई लड़ते हैं। तुलसी दास जी कहते हैं कि मेरे जैसे शठ की बात कौन सुनता है, कलिकाल में कुचाल पर ही प्रीति है। इस प्रकार तुलसीदास जी ने अपने को बारम्बार शठ, नीच, पामर आदि कहा है। यह उनकी नीचता नहीं, किन्तु विनम्रता है।

1052. प्रश्न—जैन साधु सफेद कपड़े से मुंह तथा कान क्यों बांधते हैं?

उत्तर—कान नहीं बांधते हैं, किन्तु मुंह बांधने के लिए कान में कपड़े को केवल फंसाते हैं। मुंह इसलिए बांधते हैं कि उससे निकले भाप से सूक्ष्म जन्तु मर न जायें। वे मुख-पट्टी को अहिंसा का प्रतीक भी मानते हैं। इससे बात करते समय दूसरे के ऊपर थूक भी नहीं पड़ता। यह पट्टी उनके पंथ का चिह्न भी हो जाती है।

1053. प्रश्न—साधु-सन्त को सम्पत्ति का मोह नहीं रहता है, तो वह अपने घर में अपना हिस्सा क्यों बंटाते हैं?

उत्तर—सन्त जन अपने पूर्व के माने गये घर तथा धन में हिस्सा नहीं बंटाते। यदि कोई बंटाता है तो वह ठीक नहीं करता है। घर में हिस्सा बंटाना साधु-वेष के विरुद्ध है।

1054. प्रश्न—वाली ने राम का कुछ भी नहीं बिगाड़ा था, फिर राम ने वाली को छिपकर क्यों मारा?

उत्तर—यदि यह घटना सच है तो अपने राजनीतिक लाभ लेने के लिए किया गया है। वाली के मरने पर ही सुग्रीव को राज्य तथा सेना मिलते और वह तभी राम की सहायता कर सकता। राम की वाली के सामने जाने की हिम्मत नहीं थी, इसलिए उन्होंने छिपकर मारा। राम के जीवन में यह सबसे बड़ा धब्बा है। इसीलिए पण्डितों ने क्षमा नहीं की और कहा कि राम ही कृष्ण हुए तथा अन्त में जरा नाम के व्याध से मारे गये।

1055. प्रश्न—अपना मन बहुत रोकने पर भी न रुके तो इसे क्या मानना चाहिए, संकल्पशक्ति की कमी, समझ की कमी या प्रारब्ध?

उत्तर—उक्त कारणों में से कोई भी या सभी कारण हो सकते हैं। दृढ़ संकल्पशक्ति होने से मन रुकने लगता है। इसमें अच्छी समझ तो चाहिए ही। पूर्व के संस्कार ज्यादा बलवान हैं यही मानो प्रारब्धवेग है, परन्तु यह शरीर के भोग की तरह नहीं है। इसे विवेक द्वारा क्षीण किया जा सकता है। अतएव मन रोकने में ही सच्चा सुख है यह समझ जब पक्की हो जाती है तब इस काम को करने के लिए दृढ़ संकल्प लिया जाता है और दृढ़ संकल्प द्वारा जब दीर्घकाल तक मन को वश में करने का प्रयत्न चलता है तब धीरे-धीरे अवश्य सफलता मिलती है। इसमें घबराना नहीं चाहिए। लोग व्याकरण, संगीत, कला आदि में अपनी जिन्दगी का आधा हिस्सा लगा देते हैं, कोई-कोई तो बुढ़ापा तक सफल होते हैं, तो मन रोकने में घबराने का प्रश्न ही नहीं उठता। यह निश्चित है कि जो पक्के निश्चय से लगा रहेगा उसका मन अवश्य उसके वश में हो जायेगा। वस्तुतः संसार में कुछ भी अपने अधीन नहीं है, केवल मन को ही हम अपने अधीन कर सकते हैं।

1056. प्रश्न—जब जीव को अपने कर्मों के ही फल मिलते हैं, तो हम भक्ति क्यों करें?

उत्तर—कर्मों को सुधारने के लिए मन को कोमल बनाना पड़ता है और मन को कोमल बनाने के लिए भक्ति करनी चाहिए। माता-पिता एवं संत-गुरुजनों की विशेष भक्ति करनी चाहिए। वैसे प्राणि मात्र के प्रति कोमल भाव एवं बरताव करना चाहिए। यह प्राणि-जगत ही भक्ति-भाजन भगवान है। अहिंसा का पालन करना ही भक्ति है।

1057. प्रश्न—प्रेम कब अन्धा होता है और कब महान तथा पवित्र?

उत्तर—संकुचित प्रेम अन्धा है, व्यापक प्रेम महान है। भोगों को पाने के लिए किया गया प्रेम अन्धा है तथा प्राणियों को सुख देने के लिए किया गया प्रेम महान है।

1058. प्रश्न—ज्ञान क्या है, मैं कैसे ज्ञानवान बनूं?

उत्तर—अपनी आत्मा को पहचान लेना ही ज्ञान है और सत्संग से ज्ञानवान हुआ जा सकता है।

1059. प्रश्न—काम-वासना की उपज का कारण संसार, शरीर या प्रारब्ध, क्या है?

उत्तर—मन के अविवेक तथा गलत संकल्पों से काम-वासना की उत्पत्ति होती है। संसार तथा प्रारब्ध उसमें सहायक होते हैं। जो साधक अपने हृदय के अविवेक को नष्ट कर देता है और संकल्पों के त्याग का अभ्यासी हो जाता है, उसके मन से काम-वासना की निवृत्ति हो जाती है। ऐसा साधक सब समय सावधान रहता है। वह देखने, सुनने तथा पांचों विषयों के व्यवहार में सदैव संयम रखकर मन की निरंतर निगरानी रखता है।

1060. प्रश्न—अहंकार की सीमा कहां तक है, क्या रहनी का अहंकार नहीं होता है?

उत्तर—सदैव अपने मन को देखते रहो, जिसका भी अहंकार हो, छोड़ते रहो, अपने आत्मा के अलावा सारा दृश्य ही अहंकार की सीमा है। जब व्यक्ति दृश्यों से लौटकर अपने आप में शांत हो जाता है तब सारे अहंकारों का विलय हो जाता है।

1061. प्रश्न—यदि शरीर छोड़ते समय जो चिन्तन होता है जीव उसी को पाता है, तो यदि व्यक्ति पत्नी-बच्चे का स्मरण करते हुए शरीर छोड़ता है तो क्या वह मनुष्य शरीर पायेगा?

उत्तर—पत्नी-बच्चे पशु-पक्षी खानियों में भी मिलते हैं। इसलिए इसको लेकर मनुष्य शरीर ही में आना पड़े ऐसी कोई बात नहीं।

ऐसा जीवन बनाओ कि हर समय अपने अविनाशी स्वरूप राम का ही स्मरण रहे और मरते समय उसी का स्मरण करते हुए अपने आप में शांत हो जाये।

1062. प्रश्न—भजन क्या है और कैसे करें?

उत्तर—मन के विकारों का त्याग भजन है। विचारों द्वारा मनोविकारों का त्याग होता है। मनोविकारों का त्याग हो जाने पर जीव मुक्त ही है।

1063. प्रश्न—पुनर्जन्म के विषय में प्रत्यक्ष प्रमाण क्या है?

उत्तर—सत्ता की अनादिता। जड़ और चेतन दोनों अनादि तथा नित्य वस्तुएं हैं। जो चेतन आज देहधारी है, वह अचानक देह में नहीं आ गया है। वह इसके पहले भी देह में रहा तभी उसके वासनावश इस शरीर में आया है। सभी जीवों के कर्म फल भोगों की भिन्नता प्रत्यक्ष है। यह विषय सूक्ष्म है। इसके विषय में सद्ग्रन्थों में जितना लिखा गया है उतना यहां लिखा जाना सम्भव नहीं। अतएव सद्ग्रन्थ पढ़ो और समझकर संतों एवं भक्तों से साक्षात सत्संग करो।

1064. प्रश्न—जीव जब एक दूसरे से पृथक हैं तब वे अखण्ड कैसे? ब्रह्मवादी कहते हैं कि अज्ञानदशा में जीव अलग-अलग प्रतीत होते हैं, ज्ञान हो जाने पर एक हो जाते हैं। क्या समझें?

उत्तर—यदि संसार में एक अखण्ड सत्ता हो तो संसार रहेगा ही नहीं। गति, स्फूर्ण, संचालन, परिवर्तन आदि में यही कारण है कि संसार असंख्य मौलिक द्रव्यों का संयोग है। यदि जीव एक है तो एक का जन्म दूसरे की मृत्यु, एक का बंध तथा दूसरे का मोक्ष क्यों?

अतएव जीव असंख्य तथा अलग-अलग हैं। अलग-अलग सब जीव अपने आप में अखण्ड हैं। जड़तत्त्वों की अन्तिम इकाई भी अखण्ड है।

अज्ञान-दशा में जो जीव का स्वरूप है वही ज्ञानदशा में भी रहता है। दोनों में फर्क केवल इतना है कि अज्ञान-दशा में वह दुखी रहता है तथा ज्ञान-दशा में दुखों से मुक्त हो जाता है।

जीव गुणों में एक है। अर्थात सभी जीवों का ज्ञानगुण एक है, परन्तु व्यक्तित्व अनेक हैं।

1065. प्रश्न—मनुष्य के ऊपर वंश-परम्परा का प्रभाव पड़ता है या संगति का?

उत्तर—दोनों का। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह जीवन भर कुसंगति से बचे और जो वंशगत दोष हों, उन्हें भी अभ्यास से दूर करे।

1066. प्रश्न—चिन्ता और निस्पन्द विचार में क्या अन्तर है?

उत्तर—चिन्ता चंचलता एवं दुख का कारण है और निस्पन्द विचार का अर्थ चंचलता-रहित एवं शांत विचार है।

1067. प्रश्न—किसी लड़की से प्यार करना आप घृणा मानते हैं जबकि वह पति-पत्नी के सम्बन्ध के रूप में बदल सकता है, फिर यह घृणा कैसे हुआ?

उत्तर—अमर्यादित लड़की-लड़के का तथाकथित प्यार पति तथा पत्नी के सम्बन्ध रूप में कहीं एक प्रतिशत से भी कम घटता होगा, शेष तो केवल सामाजिक मर्यादा का उल्लंघन कर परिवार तथा समाज को गन्दगी से भरता है। अत: इस प्यार के चक्कर से लड़की तथा लड़के को बचकर पढ़ाई-लिखाई और उन्नति के काम में दत्तचित्त होकर लगना चाहिए।

1068. प्रश्न—कुछ लोग 'सत्य नाम' कहने पर इसे निरर्थक बताते हैं। आपके विचार क्या हैं?

उत्तर—'सत्य नाम' सत्य की तरफ संकेत करता है, फिर निरर्थक क्यों है? अभिवादन में अनेक शब्दों का प्रयोग चलता है। उनमें 'सत्य नाम' अच्छा ही है।

1069. प्रश्न—सत्य नाम जीवात्मा वाचक है या परमात्मा वाचक?

उत्तर—परमात्मा आत्मा से कोई अलग वस्तु नहीं है। शुद्धात्मा ही परमात्मा है और उसी के लिए सत्य नाम का प्रयोग बहुत-से लोग करते हैं।

1070. प्रश्न—सहनशील कितना और कब तक बने, क्योंकि इसकी भी सीमा होती है?

उत्तर—साधक को वहां तक सहना चाहिए जहां तक या जब तक कष्ट आये। साधक का सहना ही काम है।

1071. प्रश्न—चन्द्रमा की सोलह कलाएं कौन हैं?

उत्तर—कला का अर्थ अंश है। चन्द्रमा की सोलह कलाएं ये हैं—अमृता, मानदा, पूषा, तुष्टि, पुष्टि, रति, धृति, शशिनी, चन्द्रिका, कांति, ज्योत्सना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूर्णा तथा पूर्णामृता। ये तिथि के अनुसार घटती-बढ़ती रहती हैं।

1072. प्रश्न—पूरा शरीर चेतनवत क्यों भासता है?

उत्तर—क्योंकि चेतन ने अपनी सत्ता पूरे शरीर को दे रखी है। जैसे घर में एक बत्ती जल जाने पर पूरा घर प्रकाशित होता है, वैसे जीव के निवास से पूरा शरीर चेतनयुत रहता है।

* * *

1073. प्रश्न—विदेशी लेखक 'दास' शब्द को बड़ी नीच दृष्टि से देखते हैं। फिर हमारे यहां बड़े-बड़े सन्तों के नामों में 'दास' शब्द क्यों लगा है; जैसे—सूरदास, तुलसीदास, कबीरदास आदि?

उत्तर—पुराकाल में जिन्हें गुलाम बनाकर रखा जाता था, उन्हें दास कहा जाता था। ऋग्वेद पढ़ने से पता लगता है कि आर्य लोग जब सिन्ध तथा पंजाब के क्षेत्र में फैले, तब उन्हें वहां के निवासियों का विरोध सहना पड़ा। उनसे लड़ाइयां हुईं। आर्यों ने उन्हें दस्यु कहा। पीछे से उन्होंने उन पर विजय करके उन्हें दास कहा। ऋग्वेद में आर्यों ने दासों को काले, नकचिपटे, समझ में न आने वाली तथा कर्कस भाषा बोलने वाले और शिश्न (जननेन्द्रिय) को देवता मानने वाले 'शिश्न देवा' कहा है। ये सब निश्चित ही भारत के आदिवासी थे। ऋग्वेद के अनुसार ये धनी, बड़े-बड़े दुर्ग वाले तथा शूरवीर थे। ये आर्यों के धर्म यज्ञ-हवन को नहीं मानते थे। बहुत युद्ध के बाद आर्यों ने इन पर विजय पायी और उन्होंने इन्हें अपना गुलाम बनाया तथा दास कहा।

वैसे दास-प्रथा पूरे संसार में थी। बलवान लोग निर्बलों को अपने अधीन करके उनसे अपनी सेवा कराते थे और उन्हें दास कहते थे। मनुस्मृति (8/415) के अनुसार दासों के सात प्रकार हैं—"जिसे युद्ध में बन्दी बना लिया गया हो, जो अपनी जीविका के लिए स्वयं समर्पित हो गया हो, जो स्वामी के घर में रहने वाले दास-दासी से पैदा हुआ हो, जो खरीद कर लाया गया हो, जिसे दान में प्राप्त किया गया हो, जो पिता की परम्परा से उत्तराधिकार में मिला हो और ऋण आदि के कारण जिसे दण्डित करके रखा गया हो।"

आज जैसे बाजारों में बैल, घोड़े आदि बिकते हैं, वैसे पुराकाल में दास-दासी के नाम से स्त्री-पुरुष बिकते थे, राजा-महाराजा ब्राह्मणों एवं पुरोहितों को दान में देते थे। यह निश्चित ही विश्व-व्यापी क्रूर-प्रथा थी। भारत में अंग्रेजों के आने के बाद तक यह प्रथा चालू थी। सन् 1843 में इसे बन्द कराने के लिए कानून पास किया गया था। नेपाल में दास-प्रथा बीसवीं शताब्दी के शुरू में बन्द हुई है।

'दास' शब्द का अपवाद भी है। वैदिक काल का एक आर्य-राजा 'दिवोदास' था जिसका पुत्र 'सुदास' हुआ। इतरा नाम की दासी के पुत्र 'महीदास' थे जो 'ऐतरेय महीदास' कहलाते थे। इन्हीं के नाम से ऋग्वेद का ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ बना है। ये ब्रह्मचारी थे तथा 116 वर्षों तक जीवित रहे।

भारत में जब भक्ति-सम्प्रदाय का उदय हुआ, तब कुछ शताब्दियों के बाद साधकों ने अपने आपको भगवान या सद्गुरु का दास कहा और माना। इसलिए भक्ति-सम्प्रदाय के उच्चकोटि के सन्तों के नाम में भी 'दास' शब्द का प्रयोग

हुआ। इसे अपनी विनम्रता के लिए सन्तों ने स्वयं स्वीकारा है। कबीर साहेब तो जीव ही को शिव एवं आत्मा को ही परमात्मा मानते थे। इस प्रकार वे आत्मज्ञानी पुरुष थे। परन्तु उन्होंने विनम्रता के लिए स्वयं को जगह-जगह दास कहा। सन्त समर्थ रामदास का 'दासबोध' ग्रंथ का ही नाम है। बृहत् हिन्दी कोश में दास के अनेक अर्थ देते हुए 'ज्ञानात्मा' तथा 'आत्मज्ञानी' भी दिया गया है। इतना निश्चित समझ लो कि 'दास' विशेषण से सम्पन्न जो सन्त हैं, वे वैसे दास नहीं हैं जो पुरानी प्रथा के व्यक्ति थे।

कितने शब्द देश-काल के आयाम में चलते-चलते अपने अर्थ बदलते हैं। ऋग्वैदिक[1] प्रतिष्ठित आर्य-राजा दु:शीम, पृथु, तथा वेन के साथ एक राजा 'राम' नाम से याद किये गये हैं, जिनके लिए 'असुर' विशेषण लगा है। असुर बलवान को कहते हैं। 'असु' का अर्थ प्राण है तथा 'असुर' का अर्थ प्राणवान एवं बलवान है। परन्तु आज कोई भारतीय अपने नाम में असुर विशेषण नहीं चाहेगा। ऋग्वेद में एक सौ पांच (105) बार असुर शब्द आया है। जिनमें पंद्रह (15) बार घृणा व्यंजक है और नब्बे (90) बार आदर सूचक। ऋग्वेद (3/55) में बाइस (22) बार महद्देवानामसुरत्वमेकम्—महान देवताओं का असुरत्व (बल) एक है, कहा गया है। आर्य तथा वेदों के अनुसार 'देव' चमकने वाला या कल्याण-दाता है, परन्तु पारसियों के शास्त्रों में देव का अर्थ महा दुष्ट है। संस्कृत-कोश के अनुसार 'राम' का अर्थ सुहावना, आनन्दप्रद, हर्षदायक, सुन्दर, प्रिय, मनोहर के साथ मलिन, धूमिल तथा काला भी है। ईसा पूर्व काल में 'हरि' का अर्थ घोड़ा, वानर आदि था, किन्तु पीछे ईश्वर तथा आत्मा हो गया। वेदों में इन्द्र सर्वोच्च देवता है, परन्तु पुराण तथा भक्तिकाल में इन्द्र पतित माना जाने लगा।

अतएव केवल शब्द के चक्कर में न पड़कर उसके देश-काल समर्थित भाव को समझने का प्रयास करना चाहिए। दास नाम से प्रचलित संत मन-इन्द्रियों को जीतकर जगत के स्वामी होते हैं। वे तो अपनी विनम्रता के लिए स्वयं को दास कहते या लिखते हैं।

1074. प्रश्न—आज-कल हर व्यक्ति नौकरी के पीछे भाग रहा है जबकि पहले ऐसा नहीं था। क्या इस क्रिया का लगातार विकास उचित है?

उत्तर—नौकरी की जगहें सीमित हैं। अतएव उनके पीछे बहुत लोगों के भागने का परिणाम निराशा ही होगा। लोगों को खेती, कला तथा व्यवसाय पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

1075. प्रश्न—कोई भी प्रतिज्ञा लेते समय भय क्यों होता है?

---

1. ऋग्वेद 10/93/14।

उत्तर—प्रतिज्ञा को निभाने में लगने वाले त्याग और श्रम की दुर्बलता के कारण। किसी भी प्रतिज्ञा एवं उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए हमें बड़े-से-बड़े त्याग तथा श्रम करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

1076. प्रश्न—मैं साधु बनूं कि माता-पिता की सेवा करूं?

उत्तर—मन से साधु हो जाओ और माता-पिता की सेवा करो। जब मन में पूर्ण वैराग्य उदय होगा, तब राय लेने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

1077. प्रश्न—मन बहुत रोकने पर भी नहीं रुकता, क्या करें?

उत्तर—खूब सेवा का काम करो, पढ़ो-लिखो तथा सद्ग्रंथों का स्वाध्याय करो। मन को गलत चिन्तन से हटाकर उसे अच्छे चिन्तन एवं अच्छे काम में लगाओ। इस प्रकार करते चलो। धीरे-धीरे वह अपने वश में हो जायेगा। जीवन भर मन को वश में रखकर ही सच्चा सुख मिल सकता है।

1078. प्रश्न—मुहब्बत जिसने की है, धोखा खाया है। फिर भी लोग सावधान क्यों नहीं होते?

उत्तर—मोह-मूढ़ता के कारण। इसे छोड़ना चाहिए।

1079. प्रश्न—शील और धर्म में क्या अन्तर है?

उत्तर—मन, वाणी तथा आचरण की कोमलता, नैतिकता एवं समस्त शुभाचार शील की परिभाषा है और यही सब मानव-धर्म है। जो शीलवान है, वह धार्मिक है।

1080. प्रश्न—मनसा-भ्रम क्या है?

उत्तर—मन की कल्पना से उठा हुआ भ्रम। सत्संग, सद्ग्रन्थावलोकन तथा विवेक से मन का भ्रम मिटता है।

1081. प्रश्न—संसार में अधिकतम दुख है, फिर हम इसमें क्यों जीना चाहते हैं?

उत्तर—मोह-वश। जिनका मोह मिट जाता है वह न जीना चाहता है और न मरना। वह सदैव अपने स्वरूप में, आत्म-स्थिति में स्थित रहता है।

1082. प्रश्न—कबीरपंथ के पारख सिद्धांत में इलाहाबाद का कबीर संस्थान निरन्तर प्रगति करता चला जा रहा है। यह वहां के कर्मठ साधु-ब्रह्मचारियों के श्रम, सहयोग एवं सद्भावना का परिणाम है। आपने अपने साधुओं के लिए अच्छी व्यवस्था कर रखी है। परन्तु हम ब्रह्मचारिणियों के

लिए आप क्या कर रहे हैं? ब्रह्मचारिणियों के लिए एक मठ होना चाहिए, जहां वे रहकर स्वाध्याय एवं साधना कर सकें।

उत्तर—यह उचित है कि ब्रह्मचारिणियों का मठ हो, परन्तु इसका स्थापन ब्रह्मचारिणियों को ही करना चाहिए। आज से चालीस-पैंतालीस वर्ष पूर्व एक लड़की सुदूर युगोस्लाविया (यूरोप) से भारत आयी थी और उसने अपने श्रम एवं सेवा से भारत में महान कीर्तिमान स्थापित किया। आज उसके पूरे विश्व में सेवा केन्द्र हैं जिनमें वृद्धों, शिशुओं, रोगियों, अपंगों की सेवा होती है और इनमें सत्ताइस सौ ब्रह्मचारिणियां काम करती हैं। यह लड़की है मदर टेरेसा जो आज वृद्धा है।

लखनऊ के नवाब के कमरे में एक सांप निकला। उन्होंने घबराकर नौकरानी से कहा—अरे, किसी मरदुये को बुला। नौकरानी ने कहा—हुजूर! आप भी तो मरदुये हैं। नवाब ने कहा कि तू ठीक कहती है और उन्होंने तलवार लेकर सांप को मार दिया। तो बेटी, तुम लोग स्वयं यह काम कर सकती हो। नारियों के मठ में पुरुष की छाया भी नहीं होनी चाहिए। तुम इतनी बड़ी वीरांगना हो कि पत्र में अपने नाम और पता तक देने की हिम्मत नहीं की, तो तुमसे ज्यादा क्या आशा की जाये! लेकिन मैं तुम्हें साहस देना चाहता हूं कि तुम कायरता छोड़कर अपने आपको प्रकट करो और ब्रह्मचारिणी समाज के उत्थान के लिए डट जाओ।

1083. प्रश्न—मैं चार वर्षों से स्कूल में ही एक विजाति लड़की पर आशिक हूं और वह मेरे ऊपर। यह बात दोनों के घरवाले जान जाने पर अलग-अलग हम दोनों की सजाति लड़की-लड़के से शादी कर दिये। परन्तु हम दोनों उन्हें न चाहकर एक दूसरे को चाहते हैं। हम दोनों परस्पर माल्यार्पण एवं सेन्दुरदान भी गुप्त रूप से कर लिए हैं। हम एक दूसरे के बिना जीवित नहीं रह सकते, मर जायेंगे। हम क्या करें?

उत्तर—कायरता छोड़ दो। कौन किसके बिना नहीं रह पाता है! अभी पता चल जाये कि लड़की असाध्य बीमारी से पीड़ित है, तो तुम उसे देखना भी पसन्द नहीं करोगे; और तुम्हारे ऐसा हो जाने पर वह तुम्हें देखना नहीं चाहेगी। माता-पिता ने जिससे शादी कर दी है, तुम दोनों को अपना मन उन्हीं में लगाना चाहिए। जीवन को द्वन्द्वों में मत डालो। तुम उस लड़की को समझा दो कि वह अपने विवाहित पति से प्रेम करे और वह तुमसे अपना मन पूर्णतया हटा ले। और तुम उससे पूर्णतया हट जाओ। तुम दोनों भावुकता छोड़कर अपनी-अपनी मर्यादा में चलो।

1084. प्रश्न—समन्वय क्या है?

उत्तर—मेल बैठाना। विरोधी बातों को हटाकर अनुकूल बातों का मेल बैठाना ही समन्वय है। तुम अपने पास के लोगों की विरोधी बातें छोड़कर उनकी अनुकूल बातें अपने लिए लो और मेल मिलाप से रहो।

1085. प्रश्न—क्या गांधारी के सौ पुत्र थे?

उत्तर—एक स्त्री अपने जीवन में सौ पुत्रों को जन्म नहीं दे सकती। हां, अनेक स्त्रियों से सौ पुत्र एक पुरुष द्वारा हो सकते हैं।

1086. प्रश्न—विद्यार्थी को कैसा जीवन रखना चाहिए?

उत्तर—सादा, सरल, निश्छल, श्रमशील और सत्यपरायण।

1087. प्रश्न—विषय-वासना से शरीर और मन दोनों खोखले हो जाते हैं। मैं इससे कैसे बचूं? मन में वैराग्य कैसे आये?

उत्तर—यह प्रश्न यदि तुम्हारे हृदय की गहराई से हो और यदि तुम इसे अपने मन में सब समय बनाये रख सके तो धीरे-धीरे स्वयं विषयों से वैराग्य हो जायेगा। विषयों के प्रति निरन्तर घृणा होने से वैराग्य हो जाता है। अंतत: यथार्थ विवेक द्वारा संसार की वास्तविकता का जब पूर्णतया दर्शन हो जाता है तब पूर्ण वैराग्य हो जाता है। प्राणी-पदार्थों में भोग बुद्धि का उदय न होना ही वैराग्य की पराकाष्ठा है।

1088. प्रश्न—क्या किसी महिला साधिका को पुरुषों से ज्यादा घनिष्ठता, हंसी-मजाक आदि करना चाहिए?

उत्तर—सामान्य स्त्रियों को भी पर पुरुषों की घनिष्ठता से दूर रहना चाहिए; और साधिकाओं को तो सभी पुरुषों से हटकर रहना चाहिए।

1089. प्रश्न—हमारे मन में अच्छी भावना के साथ गलत भावनाएं भी आती हैं, उन्हें कैसे रोका जाये?

उत्तर—गलत को गलत जान लेने पर उनका आना रुकने लगेगा। हमें चाहिए कि हम सावधानी से गलत को गलत समझें।

1090. प्रश्न—शिशु मुस्कुराते हैं। बिना पूर्व अनुभव के ऐसा कैसे होता है?

उत्तर—जन्म-जन्मांतरों के संस्कारों से जीवों के ऐसे देह-स्वभाव हैं जिससे वे अनुकूल मनोभावना पर मुस्कुराते हैं।

1091. प्रश्न—मैं जब किसी काम को करने के लिए या कहीं जाने के लिए सोचता हूं तब मेरे भीतर उसके विरोधी विचार भी उठते हैं। इस प्रकार मैं

बहुत समय तक उलझन में पड़कर सही निर्णय नहीं ले पाता हूं। इसका समाधान कैसे हो?

उत्तर—यह मानसिक दुर्बलता है। विवेकवान सज्जनों-संतों का सत्संग करो, सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय करो और गहराई से मन का निरीक्षण करो। चंचलता छोड़कर अन्तर्मुखी बनो। आत्मज्ञान, आत्मविश्वास तथा आत्मसंयम बढ़ते जाने से उपर्युक्त दुर्बलता मिट जायेगी।

* * *

1092. प्रश्न—रामजन्मभूमि और बाबरी मसजिद को लेकर देश में इंसान के बहुत रक्त बहे, क्या यह उचित है?

उत्तर—राजनीतिक लोग धार्मिक भावुकों को बहकाकर उन पर अपना चौधराना चलाते हैं, उनसे खून खराबा कराते हैं और इसी के सहारे शासन की गद्दी पर पहुंचना चाहते हैं। इस कांड से न राम की प्रतिष्ठा है और न रहीम की। इससे मानवता, धर्म एवं देश सबका विनाश है। श्रीराम ने अयोध्या की राजगद्दी इसलिए त्याग दी कि अयोध्या में शांति रहे, किंतु आज कुछ नेता राजगद्दी पर पहुंचने के लिए अयोध्या की शांति भंग करने में लगे हैं। फिर भी उनका दंभ है कि हम रामभक्त हैं।

1093. प्रश्न—सुना है कि एक धर्मगुरु ने अपनी इच्छा से शरीर छोड़ा है। उसकी पत्नी भी अपनी इच्छा से ही शरीर छोड़ेगी। वे बहुत पहुंचे हुए हैं। क्या उनके मार्ग पर चलकर हम भी वैसे बन सकते हैं?

उत्तर—धोखे में मत पड़ो। सत्संग, स्वाध्याय एवं आत्मनिरीक्षण करके अपने आप का सुधार करो।

1094. प्रश्न—'कोटि नाम संसार में, ताते मुक्ति न होय। आदि नाम जो गुप्त जपे, जाने बिरला कोय।' यह आदि नाम क्या है?

उत्तर—यह सब गोरखधंधा है। सारे नाम तथा मन्त्र मनुष्यों के कल्पित एवं रचित हैं जिसे जिस नाम एवं मन्त्र में श्रद्धा हो वह जप सकता है। इससे मनुष्य के मन में सात्विक प्रसन्नता होती है। मोक्ष का अर्थ है मन का वासनाहीन हो जाना। सारे संस्कारों, आग्रहों, प्रतिकारों, क्षोभों आदि से छुटकारा ही मोक्ष है। पूर्ण निर्भयता मोक्ष है। यह सच्चा विवेक उदय होने पर होता है।

1095. प्रश्न—दवा देने से पेट के कीड़े मरते हैं, तो क्या इससे हमें पाप पड़ेगा?

उत्तर—तुम तो रोगी को रोग-मुक्त करने के लिए दवा देते हो। तुम्हारा काम पुण्य का है।

1096. प्रश्न—हम दवा देकर मरीज से यदि कम पैसे लेते हैं तो मरीज कहता है कि इतनी सस्ती दवा से रोग कैसे दूर होगा! यदि ज्यादा पैसा लिया जाये तो रोगी को रोग-नाश होने पर विश्वास होता है। सन्त कहते हैं कि दवा का दाम उचित लिया करो। क्यों करें?

उत्तर—दाम उचित लो। तुम्हारी कार्य कुशलता से लोग धीरे-धीरे प्रभावित होंगे। इससे तुम्हारी आमदनी भी बढ़ेगी।

1097. प्रश्न—जब ज्ञान से सभी कर्म नष्ट होना माना जाता है, तब ज्ञानियों के भी रोगग्रस्त होने का क्या कारण है?

उत्तर—कर्म वे नष्ट होते हैं जो वासनागत एवं संस्कार रूप में हैं। जिन कर्मों के फलभोग प्रारब्ध रूप में हैं और शरीर में उदय होने के उन्मुख हैं, उनका नाश ज्ञान से नहीं होता। उनका तो भोग ही से क्षय होगा। ज्ञान की आग से मान्यता का जंगल जलता है, लकड़ी का नहीं।

1098. प्रश्न—मोह की पराकाष्ठा क्या है?

उत्तर—अपने माने गये नाम-रूप को प्रकाशित करने का भाव।

1099. प्रश्न—कर्म करे औ रहे अकर्मी, ऐसी युक्ति बतावे। सदा आनन्द फन्द से न्यारा, भोग में योग जगावे॥ इसका अभिप्राय क्या है?

उत्तर—ज्ञानी ऐसी युक्ति बताते हैं कि अशुभ कर्म करे नहीं, केवल शुभ कर्म करे और शुभ कर्म करते हुए भी उसके अहंकार तथा फल की कामना से रहित रहे तो मानो वह कर्म करते हुए भी अकर्म है। विषयों के माने हुए आनन्द के बन्धनों से अपने मन को सदैव अलग रखे अथवा बन्धनों से अलग रहकर सदैव त्याग में आनन्दित रहे और पूर्व से विद्यमान इस भोगी मन में योग का अभ्यास जाग्रत करे। अर्थात भोग-मार्ग छोड़कर योग एवं त्याग की तरफ बढ़े।

1100. प्रश्न—इच्छाओं पर विजय कैसे पायें?

उत्तर—उन्हें दुखदायी समझकर। श्रम करते चलो आवश्यकता की पूर्ति अपने आप होगी। इच्छा का सदैव त्याग करो क्योंकि वह पूरी होने वाली नहीं है।

1101. प्रश्न—अक्षय पुरुष एक पेड़ है, निरंजन वाकी डार। त्रिदेवा शाखा भये, पत्र भया संसार॥ इसका भाव क्या है?

उत्तर—यह आत्मा ही अक्षय पुरुष है। यही ज्ञान-विज्ञान का मूल होने से मानो पेड़ है। निरंजन मन है जो शाखा है। मन ही से सारी कल्पनाएं फैलती हैं। सत, रज तथा तम ये तीन गुण हैं। ये उपशाखाएं हैं। सारे कर्म त्रिगुणात्मक ही हैं। संसार का मतलब मोह-माया का जंजाल है जो पत्र है।

तुम्हीं अक्षय पुरुष आत्मा एवं चेतन हो। तुम्हीं मन, त्रिगुण-कर्म एवं मोह-प्रपंच में भूले हो। तुम इन्हें त्यागकर अपने आप में स्थित हो जाओ तो मुक्त ही हो।

इसका दूसरा अर्थ है ईश्वर आदि पुरुष वृक्ष है, हिरण्यगर्भ निरंजन है जो उसकी शाखा है, ब्रह्मा, विष्णु तथा महादेव उपशाखाएं हैं और संसार की विविधता उसके पत्ते हैं। परन्तु इस अर्थ में कोई बौद्धिक सन्तोष नहीं मिल सकता है और न इसमें कोई मानव के उपयोग की बात ही है।

1102. प्रश्न—हिन्दू पूर्व तथा मुसलिम पश्चिम तरफ झुककर नमस्कार क्यों करते हैं?

उत्तर—जिधर सूर्य उगता है उधर पूर्व कहते हैं। सूर्य प्रकाशस्वरूप होने से ज्ञान का प्रतीक है। अत: हिन्दू पूर्व की ओर झुककर मानो ज्ञान का आदर करते हैं। मुसलमानों का मूल पूजा-घर अरब देश के मक्का नगर में काबा है जो भारत के पश्चिम स्थित है। अत: वे अपने पूजा-घर की ओर झुककर उसका आदर करते हैं।

परन्तु कबीर साहेब ने उक्त दोनों को चेतावनी दी है कि मनुष्य का दिल ही पूजा-घर है और चेतन-आत्मा ही ज्ञान का सूर्य है। अत: हर दिल को आदर देना सच्ची उपासना है। उनका मूल वचन है—

पूरब दिशा हरी को बासा, पश्चिम अल्लह मुकामा।
दिल में खोजि दिलहि माँ खोजो, इहै करीमा रामा॥

(बीजक, शब्द 97/10-11)

1103. प्रश्न—श्री काशी साहेब ने कहा है "नेत्र आप को नाहीं देखत। जीभ निज स्वाद कभी नहिं लेवत।" इसी प्रकार जीव अपने आपको नहीं देखता। तो निज स्वरूप का ज्ञान कैसे हो?

उत्तर—तुम्हीं सबको जानने वाले हो। तुम्हारी सत्ता निर्विवाद है। तुम वासनाओं को छोड़कर अपने आप में शांत होओ।

1104. प्रश्न—मृत्यु के बाद जीव तुरन्त शरीर धारण करता है या देर में। यदि देर में धारण करता है तो उस समय कहां रहता है?

उत्तर—जीव एक शरीर छोड़ने के बाद दूसरा शरीर तुरन्त धारण करता है। उपयुक्त स्थान न मिलने पर कुछ देर हो सकती है। इस अन्तराल में उसे रहने की कोई स्थिर जगह की आवश्यकता नहीं। यह विशाल संसार क्या उसके लिए कम पड़ जायेगा! ये ऐसी रहस्यात्मक बातें हैं कि इन्हें ज्यों-का-त्यों बता पाना असम्भव है। जिस कलम से मैं यह उत्तर लिख रहा हूं इसमें लगे सारे जड़-कण एवं परमाणु इस कलम के निर्माण के पहले कहां थे, आज से सौ वर्ष पूर्व कहां थे, पानी की जो बूंदें कल हमारी छत पर पड़ी थीं, उनके परमाणु अब कहां हैं? बता पाना असम्भव है। परन्तु इन पदार्थों के सारे परमाणु सदा से रहे हैं तथा सदा रहेंगे। सत्ता का अन्त नहीं होता। केवल गमनागमन होता है। इसी प्रकार जीव भी जहां रहेगा वहां रहेगा। वह मिट नहीं सकता।

1105. प्रश्न—विवेक जड़ है या चेतन?

उत्तर—विवेक एक मनोभाव है। उसे जड़ नहीं कह सकते और वह जीव से अलग कोई स्वतन्त्र चेतन भी नहीं है। चेतन मनुष्य जब किन्हीं दो बातों का नीर-क्षीर निर्णय करता है, तब उस समय वह मनोदशा विवेक है।

1106. प्रश्न—कहा जाता है कि जीवों के अच्छे कर्मों से ही उन्हें मनुष्य-शरीर मिलते हैं। आजकल मनुष्यों की संख्या अधिक है, तो क्या आज के जीव ज्यादा अच्छे कर्म करने वाले हैं?

उत्तर—मनुष्य का यह भ्रम है कि पहले के लोग अच्छे थे, आज बुरे हैं तथा आगे अधिक बुरे हो जायेंगे। परन्तु ऐसी बात नहीं है। अच्छे-बुरे सब समय में होते हैं। आज ज्यादा मनुष्य हैं तो जीव ज्यादा अच्छे कर्म करने वाले आज सिद्ध हों तो क्या आश्चर्य है! इसके अलावा केवल मानव शरीर का मिलना मात्र ज्यादा सौभाग्य की बात नहीं है। ज्यादा सौभाग्य की बात है मानवीय-आचरण में चलना। यदि मानवीय-आचरण न हो तो मानव पशु-पक्षी से भी ज्यादा मलिन एवं दुखी है।

1107. प्रश्न—अधिकतर लोग अपने माने हुए देवता के साक्षात्कार का दावा करते हैं। क्या कोई देव होता है?

उत्तर—मानव के समान भी इस संसार में कोई देवता नहीं होता, तो मानव से बढ़कर देवता का होना कहना व्यर्थ ही है। मनुष्य का अपने आत्मा से अलग देवता की स्थापना करना उसका अपने आपको धोखा देना है। अत: सारे देवी-देवता निरे कल्पित हैं, फिर उनके साक्षात्कार का दावा करना एक भावुकता नहीं तो क्या है!

1108. प्रश्न—आसक्ति और कर्म से जीव के देह धारण में क्या सम्बन्ध है?

उत्तर—देह और पांचों विषयों में आसक्ति और इस आसक्ति से किये गये कर्म ही तो जीव के बन्धन हैं। इसी से जीव का मन भटकता है। जिसका मन भटकता है उसको संसार में भटकना ही है।

1109. प्रश्न—जैसे बीज से वृक्ष होते हैं, वैसे कर्म से देह होती है। इसका खुलासा क्या है?

उत्तर—जैसा बीज होगा वैसा वृक्ष। आम, कटहल, नीबू, बेर आदि के बीज से उन्हीं के तो वृक्ष होंगे। इसी प्रकार जीव ने जैसे कर्म किये हैं उन्हीं के अनुसार उसे देह तथा सुख-दुख भोग मिलेंगे।

जो ज्यादा काम की बात है वह है वर्तमान में अपने मन, वाणी तथा कर्मों का सुधार करना। यही जीवन का सुधार है। जीवन के सुधार में ही जीव को शांति मिलेगी।

हम जितना अपने मन को इच्छाओं से रहित रखेंगे, अर्थात हमारी इच्छाएं जितनी कम होंगी उतनी हमें शांति मिलेगी। हम दूसरे की वस्तुओं को देखकर उसी प्रकार वस्तुएं पाने की इच्छा में न पड़ें। संसार में वस्तुएं सबको समान रूप से नहीं मिलतीं। अतएव सदैव अपने मन को बटोरकर रखना चाहिए। रहने के लिए घर, पहनने के लिए कपड़े तथा खाने के लिए रोटी मिल जाये, बस क्या चाहिए!

1110. प्रश्न—मानव-जीवन का परम लक्ष्य क्या है?

उत्तर—पूर्ण आत्मविश्राम एवं जीवन में गहरी शांति जीवन-आनंद की पराकाष्ठा है। यही जीवन का परम लक्ष्य है।

1111. प्रश्न—इस लक्ष्य की प्राप्ति कैसे होगी?

उत्तर—स्वरूपज्ञान और पूर्ण निर्मोहता से।

लेखक की अन्य कृतियां

बीजक टीका (सजिल्द)	80.00	सब सुख तेरे पास	18.00
बीजक टीका (अजिल्द)	70.00	बसै आनंद अटारी	20.00
बीजक व्याख्या : प्रथम खण्ड	225.00	छाड़हू मन विस्तारा	15.00
बीजक व्याख्या : द्वितीय खण्ड	225.00	घूंघट के पट खोल	20.00
बीजक प्रवचन	45.00	हंसा सुधि करू अपनो देश	20.00
कबीर बीजक शिक्षा	90.00	उड़ि चलो हंसा अमरलोक को	18.00
संत कबीर और उनके उपदेश	100.00	समुद्र समाना बुंद में	20.00
कहत कबीर	110.00	मेरी और ह्वेन सां की डायरी	28.00
कबीर दर्शन	200.00	बंदे करले आप निबेरा	20.00
कबीर : जीवन और दर्शन	40.00	शाश्वत जीवन	35.00
कबीर का सच्चा रास्ता	20.00	सहज समाधि	13.00
कबीर की उलटवांसियां	25.00	ज्ञान चौंतीसा	13.00
कबीर अमृतवाणी सटीक	40.00	सपने सोया मानवा	10.00
कबीर : व्यक्तित्व और कर्तृत्व	35.00	ढाई आखर	35.00
कबीर पर शुक्ल और मेरी दृष्टि	13.00	पारख समाधि क्या है?	2.50
कबीर कौन?	3.00	धर्म को डुबानेवाला कौन?	30.00
कबीर सन्देश	3.00	समझे की गति एक है	30.00
कबीर का प्रम	4.00	धर्म और मजहब	22.00
कबीर साहेब	7.00	जीवन का सच्चा आनंद	25.00
कबीर का पारख सिद्धांत	30.00	प्रश्नोत्तरी	100.00
कबीर परिचय सटीक	37.00	पत्रावली	65.00
पंचग्रथी सटीक	200.00	संसार के महापुरुष	140.00
विवेक प्रकाश सटीक	100.00	फूले और पेरियार	4.00
बोधसार सटीक	35.00	व्यवहार की कला	25.00
रहनि प्रबोधिनी सटीक	50.00	स्त्री बाल शिक्षा	25.00
गुरुपारख बोध सटीक	17.00	आप किधर जा रहे हैं?	12.00
मुक्तिद्वार सटीक	75.00	स्वर्ग और मोक्ष	17.00
रामायण रहस्य	200.00	ऐसी करनी कर चलो	25.00
वेद क्या कहते हैं?	175.00	ये भ्रम भूत सकल जग खाया	30.00
बुद्ध क्या कहते हैं ? (भाष्य)	80.00	सरल शिक्षा	28.00
मानसमणि	28.00	जगन्मीमांसा	27.00
तुलसी पंचामृत	25.00	बुद्धि विनोद	15.00
उपनिषद् सौरभ	55.00	हृदय के गीत	25.00
योगदर्शन	55.00	वैराग्य संजोवनी	20.00
गीतासार	55.00	भजनावली	20.00
वैदिक राष्ट्रीयता	6.00	आदेश प्रभा	3.00
श्री कृष्ण और गीता	6.00	राम से कबीर	12.00
मोक्ष शास्त्र	90.00	अनंत की ओर	10.00
कल्याणपथ	30.00	कबीरपंथी जीवनचर्या	12.00
ब्रह्मचर्य जीवन	28.00	अहिंसा शुद्धाहार	8.00
बूंद बूंद अमृत	18.00	हितोपदेश समाधान	10.00

मैं कौन हूं?	5.00
ब्राह्मण कौन?	7.00
नास्तिक कौन?	2.00
कृष्ण कौन?	3.00
संत कौन?	3.00
हिन्दू कौन?	3.00
जीवन क्या है?	4.00
ध्यान क्या है?	4.00
योग क्या है?	4.00
ईश्वर क्या है?	6.00
अद्वैत क्या है?	5.00
जागत नींद न कीजै	2.50
सरल बोध	4.00
श्री राम लक्ष्मण प्रश्नोत्तर शतक	3.00
सत्यनिष्ठा	40.00
कबीर अमृतवाणी वाणी (बड़ी)	80.00
बुद्ध क्या कहते हैं? (सटीक)	13.00
गृहस्थ धर्म	65.00
कबीर खड़ा बाजार में	65.00
सत्य की खोज	70.00
स्वभाव का सुधार	65.00
भूला लोग कहे घर मेरा	30.00
ऊंची घाटी राम की	35.00
शंकराचार्य क्या कहते हैं?	90.00
न्यायनामा (सटीक)	15.00
भवयान	140.00
विष्णु और वैष्णव	5.00
बीजक टीका (मराठी)	110.00
निर्मल सत्यज्ञान प्रभाकर	140.00
लाओत्ज़े क्या कहते हैं?	130.00
राम नाम भजु लागू तीर	18.00
आत्मसंयम ही राम भजन है	25.00
आत्मधन की परख	20.00

ENGLISH TRANSLATION

Kabir Bijak (Commentary)	90.00
Eternal Life	50.00
Art of Human Behaviour	40.00
Who am I?	6.00
What is Life?	6.00
Kabir Amritvani	125.00
The Bijak of Kabir (In Verses)	110.00
Kabir Bijak (Elucidation Sakhi Chapter)	250.00
Sant Kabir and his Teaching	200.00
Life and Philosophy of Kabir	50.00

गुजराती अनुवाद

बीजक मूल	30.00
बीजक व्याख्या : भाग-1	250.00
बीजक व्याख्या : भाग-2	250.00
कबीर अमृतवाणी	50.00
अढ़ी अक्षर प्रेम ना	60.00
व्यवहार नी कला	40.00
गुरुपारख बोध	20.00
स्त्री बाल शिक्षा	35.00
शाश्वत जीवन	45.00
ध्यान क्या है?	5.00
हूं कोण छूं?	6.00
धर्म ने डुबारनार कोण?	45.00
जीवन शुं छे?	6.00
ईश्वर शुं छे?	6.00
कबीर सन्देश	5.00
श्री कृष्ण अने गीता	7.00
कबीर नो साचां प्रेम	6.00
गुरुवंदना	6.00
संत कबीर अने ओमना उपदेश	150.00

कबीर संस्थान प्रकाशन

सद्गुरु श्री कबीर साहेब कृत

बीजक म्ल (छोटा)	20.00
बीजक मूल (बड़ा)	25.00
कबीर भजनावली (भाग-1)	23.00
कबीर भजनावली (भाग-2)	23.00
न्यायनामा **(श्री निर्मल साहेब)**	3.00

सद्गुरु श्री रामसूरत साहेब कृत

विवेक प्रकाश मूल	12.00
बोधसार मूल	5.00
रहनि प्रबोधिनी मूल	4.00

भजन प्रवेशिका **(श्री निर्बंध साहेब)**	80.00
सद्‌गुरु श्री विशाल साहेब कृत	
विशाल वचनामृत	80.00
संत श्री धर्मेंद्र साहेब कृत	
कबीर के ज्वलंत रूप	25.00
सारसार को गहि रहे	25.00
सद्‌गुरु कबीर और पारख सिद्धांत	3.00
पूजिय विप्र शील गुण हीना	2.50
सबकी मांगे खैर	40.00
सुखी जीवन की कला	55.00
बूंद बूंद से घट भरे	55.00
गुजराती अनुवाद	
सुखी जीवन नी कला	70.00
सद्‌गुरु कबीर अने पारख सिद्धांत	5.00
संत श्री अशोक साहेब कृत	
पानी में मीन पियासी	25.00
धनी कौन?	17.00
बोध कथाएं	40.00
ज्यों की त्यों धरि दीन्ही चदरिया	30.00
श्री भावसिंह हिरवानी कृत	
कबीर (नाटक)	40.00
प्रेरक कहानियां	40.00
जीवन का सच	40.00
काया कल्प	25.00
समर्पण	15.00
बाल कहानियां	17.00
माटी का मोह	—
अन्य लेखकों की	
गुरुवंदना (संकलित)	5.00
कल्पतरु (घनश्याम प्रसाद वर्मा)	15.00
संत वचनामृत (अज्ञात)	2.00
विनय पद (श्री सजीवन साहेब)	10.00
आत्म संयम (")	17.00
जग बौराना (रणजीत सिंह)	20.00
ज्ञान गीता (विष्णुदयाल साहेब)	6.00
पुष्पांजलि (डा. नीलमणि)	3.00
जीवन गीत (श्री जीवन साहेब)	3.00
भक्ति ज्ञान प्रकाश (बलदेव साहेब)	3.00
मधुसंचय (सत्यानंद त्यागी)	15.00
आनंद सिंधु (")	30.00
परख बोध (श्री मनी लाल)	18.00
कसौटी (श्री शिवप्रसाद मिश्र)	25.00
जन्म जन्म संग कबीर (श्री गोविंद केला)	3.00
संत ईसा और कबीर (श्री विलास जॉन)	3.00
कबीर एक नया चिंतन (श्री आत्मा प्रसाद उत्थान)	35.00
विचार माला (श्री विश्वनाथ श्रीवास्तव)	40.00

कबीर पारख संस्थान

संत कबीर रोड, प्रीतम नगर, इलाहाबाद-211 011

लेखक की अन्य कृतियां

बीजक टीका (सजिल्द)	80.00
बीजक टीका (अजिल्द)	70.00
बीजक व्याख्या : प्रथम खण्ड	225.00
बीजक व्याख्या : द्वितीय खण्ड	225.00
बीजक प्रवचन	45.00
कबीर बीजक शिक्षा	90.00
संत कबीर और उनके उपदेश	100.00
कहत कबीर	110.00
कबीर दर्शन	200.00
कबीर : जीवन और दर्शन	40.00
कबीर का सच्चा रास्ता	20.00
कबीर की उलटवांसियां	25.00
कबीर अमृतवाणी सटीक	40.00
कबीर : व्यक्तित्व और कर्तृत्व	35.00
कबीर पर शुक्ल और मेरी दृष्टि	13.00
कबीर कौन?	3.00
कबीर सन्देश	3.00
कबीर का प्रेम	4.00
कबीर साहेब	7.00
कबीर का पारख सिद्धांत	30.00
कबीर परिचय सटीक	37.00
पंचग्रथी सटीक	200.00
विवेक प्रकाश सटीक	100.00
बोधसार सटीक	35.00
रहनि प्रबोधिनी सटीक	50.00
गुरुपारख बोध सटीक	17.00
मुक्तिद्वार सटीक	75.00
रामायण रहस्य	200.00
वेद क्या कहते हैं?	175.00
बुद्ध क्या कहते हैं ? (भाष्य)	80.00
मानसमणि	28.00
तुलसी पंचामृत	25.00
उपनिषद् सौरभ	55.00
योगदर्शन	55.00
गीतासार	55.00
वैदिक राष्ट्रीयता	6.00
श्री कृष्ण और गीता	6.00
मोक्ष शास्त्र	90.00
कल्याणपथ	30.00
ब्रह्मचर्य जीवन	28.00
बूंद बूंद अमृत	18.00
सब सुख तेरे पास	18.00
बसै आनंद अटारी	20.00
छाड़हू मन विस्तारा	15.00
घूंघट के पट खोल	20.00
हंसा सुधि करू अपनो देश	20.00
उड़ि चलो हंसा अमरलोक को	18.00
समुद्र समाना बुंद में	20.00
मेरी और ह्वेन सां की डायरी	28.00
बंदे करले आप निबेरा	20.00
शाश्वत जीवन	35.00
सहज समाधि	13.00
ज्ञान चौंतीसा	13.00
सपने सोया मानवा	10.00
ढाई आखर	35.00
पारख समाधि क्या है?	2.50
धर्म को डुबानेवाला कौन?	30.00
समझे की गति एक है	30.00
धर्म और मजहब	22.00
जीवन का सच्चा आनंद	25.00
प्रश्नोत्तरी	100.00
पत्रावली	65.00
संसार के महापुरुष	140.00
फूले और पेरियार	4.00
व्यवहार की कला	25.00
स्त्री बाल शिक्षा	25.00
आप किधर जा रहे हैं?	12.00
स्वर्ग और मोक्ष	17.00
ऐसी करनी कर चलो	25.00
ये भ्रम भूत सकल जग खाया	30.00
सरल शिक्षा	28.00
जगन्मीमांसा	27.00
बुद्धि विनोद	15.00
हृदय के गीत	25.00
वैराग्य संजीवनी	20.00
भजनावली	20.00
आदेश प्रभा	3.00
राम से कबीर	12.00
अनंत की ओर	10.00
कबीरपंथी जीवनचर्या	12.00
अहिंसा शुद्धाहार	8.00
हितोपदेश समाधान	10.00

मैं कौन हूं?	5.00
ब्राह्मण कौन?	7.00
नास्तिक कौन?	2.00
कृष्ण कौन?	3.00
संत कौन?	3.00
हिन्दू कौन?	3.00
जीवन क्या है?	4.00
ध्यान क्या है?	4.00
योग क्या है?	4.00
ईश्वर क्या है?	6.00
अद्वैत क्या है?	5.00
जागत नींद न कीजै	2.50
सरल बोध	4.00
श्री राम लक्ष्मण प्रश्नोत्तर शतक	3.00
सत्यनिष्ठा	40.00
कबीर अमृतवाणी वाणी (बड़ी)	80.00
बुद्ध क्या कहते हैं? (सटीक)	13.00
गृहस्थ धर्म	65.00
कबीर खड़ा बाजार में	65.00
सत्य की खोज	70.00
स्वभाव का सुधार	65.00
भूला लोग कहे घर मेरा	30.00
ऊची घाटी राम की	35.00
शंकराचार्य क्या कहते हैं?	90.00
न्यायनामा (सटीक)	15.00
भवयान	140.00
विष्णु और वैष्णव	5.00
बीजक टीका (मराठी)	110.00
निर्मल सत्यज्ञान प्रभाकर	140.00
लाओत्ज़े क्या कहते हैं?	130.00
रामनाम भजु लागू तीर	18.00
आत्मसंयम ही राम भजन है	25.00
आत्मधन की परख	20.00

ENGLISH TRANSLATION

Kabir Bijak (Commentary)	90.00
Eternal Life	50.00
Art of Human Behaviour	40.00
Who am I?	6.00
What is Life?	6.00
Kabir Amritvani	125.00
The Bijak of Kabir (In Verses)	110.00
Kabir Bijak (Elucidation Sakhi Chapter)	250.00
Sant Kabir and his Teaching	200.00
Life and Philosophy of Kabir	50.00

गुजराती अनुवाद

बीजक मूल	30.00
बीजक व्याख्या : भाग-1	250.00
बीजक व्याख्या : भाग-2	250.00
कबीर अमृतवाणी	50.00
अढ़ी अक्षर प्रेम ना	60.00
व्यवहार नी कला	40.00
गुरुपारख बोध	20.00
स्त्री बाल शिक्षा	35.00
शाश्वत जीवन	45.00
ध्यान क्या है?	5.00
हूं कोण छूं?	6.00
धर्म ने डुबारनार कोण?	45.00
जीवन शुं छे?	6.00
ईश्वर शुं छे?	6.00
कबीर सन्देश	5.00
श्री कृष्ण अने गीता	7.00
कबोर नो साचां प्रेम	6.00
गुरुवंदना	6.00
संत कबीर अने अेमना उपदेश	150.00

पुस्तक मिलने का पता

कबीर पारख संस्थान

संत कबीर मार्ग, प्रीतम नगर, इलाहाबाद-211 011

दूरभाष : (0532) 2436820, 2436020, 2436100